



राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम

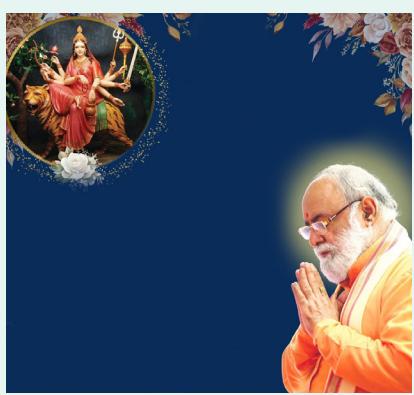
भारत श्री

राष्ट्रीय हिंदी साप्ताहिक

सोमवार, 21 जुलाई 2025 ● वर्ष 6 ● अंक 52 ● मूल्य: 5 रुपए



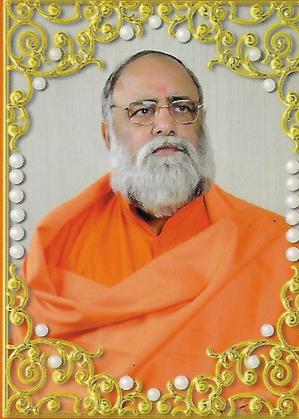
ग्रुप कैप्टन शुभांशु...



बिना गुरु के आपको ब्रह्मज्ञान
नहीं मिल सकता। गुरु मन,
चित्त बुद्धि से पार है। गुरु परीक्षा
लेने के लिए डांटें भी हैं और
गलत भी बोल देते हैं।

पेज-10-11

सद्गुरु वाणी



दिव्य पाठ प्रभु कृपा का वह आलोक है जिसे
करने के लिए किसी भी प्रकार की कठिन
तपस्या या साधना की कोई जरूरत नहीं है। यह
बड़ा सहज और सरल है।

विश्व भर में होने वाले प्रभु कृपा दुख निवारण
समागम केवल प्रभु की कृपा से संभव होते हैं।
इसका आयोजन कोई व्यक्ति नहीं करता।

परमात्मा की नजर में सभी भाई-बहन बराबर
हैं। परमात्मा जाति, धर्म, देश, सम्प्रदाय से पार
है। हमें सभी भाई-बहनों को समान दृष्टि से
देखना चाहिए।

चुनाव से पहले क्या नीतीश कुमार दिल्ली जाएंगे?

उपराष्ट्रपति की कुर्सी को लेकर बढ़ी चर्चा

बिंदु हार की राजनीति पिर एक बार नई चर्चा में घिर गई है। जैसे ही उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ के इस्तीफे की खबर आई, बिहार की सियासत में हलचल तेज हो गई। चर्चा यह कि क्या बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार अब दिल्ली की राह पकड़ेंगे और भारत के नए उपराष्ट्रपति बनेंगे? यह सवाल पहली बार नहीं उठा। 2020 के विधानसभा चुनाव के बाद जब जदयू तीसरे नंबर की पार्टी बनी थी, तब भी यही बात उठी थी कि नीतीश कुमार को दिल्ली भेजा जाएगा। अब उपराष्ट्रपति के पद के खाली होने और बिहार चुनाव की दस्तक के बीच इस चर्चा को पिर से हवा मिल गई है। लेकिन, इस चर्चा में जितना जोर है, उतना ही बड़ा "लेकिन" भी है। नीतीश कुमार का उपराष्ट्रपति बनना जितना संभव दिखता है, उतना ही असंभव भी नजर आता है। आइए समझते हैं कि बिहार में इस चर्चा के पीछे क्या माहौल है, किसे फायदा और किसे नुकसान हो सकता है।

बिहार विधानमंडल में माहौल केसा

उपराष्ट्रपति के इस्तीफे की खबर के बाद विधानसभा में विपक्ष और सत्ता पक्ष, दोनों तरफ यह चर्चा जोर पकड़ने लगी। भाजपा के विधायक हरिभूषण ठाकुर बचौल ने कहा, "अगर नीतीश कुमार उपराष्ट्रपति बनते हैं तो इससे अच्छी बात और क्या होगी। बिहार के लिए यह शुभ होगा।" इस बयान ने विपक्ष को मौका दे दिया। राजद विधायक अख्तरसुल इस्लाम शाहीन ने कहा कि भाजपा लंबे समय से नीतीश कुमार को हटाने के लिए मौके की तलाश में है।

पहले उपराष्ट्रपति बनाने की बात कही, अब उपराष्ट्रपति बनाने की बात कही। उनके मुताबिक यह भाजपा की साजिश हो सकती है ताकि बिहार में नीतीश कुमार को किनारे किया जा सके। वहाँ, भाजपा कोटे के मंत्री डॉ. प्रेम कुमार ने कहा कि यह फैसला केंद्र सरकार को लेना है, लेकिन अगर बिहार से कोई उपराष्ट्रपति बनता है तो यह खुशी की बात होगी। कुल मिलाकर, सत्ता पक्ष इस चर्चा से दूरी बनाए रख रहा है, जबकि विपक्ष इसे भाजपा की चाल बताकर लोगों के बीच मुद्दा बना रहा है।

चुनाव सिर पर, क्या अभी मुग्धिन हैं

संविधान विशेषज्ञों की मानें तो उपराष्ट्रपति का चुनाव तत्काल होना जरूरी नहीं है। दूसरी ओर, बिहार में विधानसभा चुनाव सिर पर है। अधिकतम 20 नवंबर तक नई सरकार बन जानी है। यानी 90 दिनों में चुनाव होने तय हैं। ऐसे में भाजपा बिहार चुनाव के बहुत नीतीश कुमार को दिल्ली भेजने का जोखिम नहीं उठा सकती। जब



2025 में भाजपा सबसे बड़ी पार्टी और जदयू तीसरी पार्टी बनी थी, तब भी भाजपा ने नीतीश कुमार को हटाने का जोखिम नहीं लिया। ऐसे में अभी चुनाव से पहले भाजपा ऐसा कोई कदम उठाएगी, इसकी संभावना कम है।

गठबंधन में चल रही खींचतान

नीतीश कुमार का नाम उपराष्ट्रपति पद के लिए चर्चा में आने की एक वजह हाल की खींचतान भी है। एनडीए की बैठक में जदयू कोटे के मंत्री अशोक चौधरी और भाजपा कोटे के डिप्टी सीएम विजय कुमार सिन्हा के बीच कहासुनी की खबर सामने आई। इसके बाद अशोक चौधरी ने प्रेस विज्ञप्ति जारी कर नीतीश कुमार को बिहार का सिरमौर और विकास का चेहरा बताया।

कुछ घंटों बाद विजय कुमार सिन्हा ने भी सोशल मीडिया पर नीतीश कुमार के नेतृत्व की तारीफ कर माहौल संभालने की कोशिश की। यह दिखाता है कि गठबंधन के भीतर तनाव जरूर है, लेकिन इस तनाव के बीच चुनाव के बहुत नेतृत्व बदलने का खतरा भाजपा नहीं लेगी।

अगर नीतीश कुमार उपराष्ट्रपति बनते हैं तो किसे फायदा

इस चर्चा का सबसे अहम सवाल यही है कि अगर नीतीश कुमार उपराष्ट्रपति बनते हैं, तो इसका फायदा और नुकसान किसे होगा।

भाजपा का नजरिया: भाजपा के लिए नीतीश कुमार का दिल्ली जाना चुनाव से पहले फायदे का सौदा नहीं है। उनके जाने पर भाजपा को बिहार में नया चेहरा लाना पड़ेगा, जिससे अस्थिरता का संदेश जाएगा। इससे विपक्ष को भाजपा पर हमला करने का मौका मिलेगा।

जदयू की स्थिति: नीतीश कुमार अगर दिल्ली जाते हैं तो जदयू में नेतृत्व को लेकर चुनावी खड़ी हो जाएगी। नीतीश कुमार की पकड़ और लोकप्रियता का फायदा पार्टी को चुनाव में नहीं मिल पाएगा। विपक्ष की अभी यह कहकर माहौल बना रहा है कि भाजपा चुनाव के बहुत नीतीश कुमार को किनारे करना चाहती है। लेकिन अगर ऐसा होता है तो विपक्ष के पास नीतीश कुमार को कमजोर मुख्यमंत्री कहने का मुद्दा खत्म हो जाएगा।

नीतीश कुमार के लिए क्या मायने रखेगा

अगर नीतीश कुमार उपराष्ट्रपति बनते हैं तो उनके राजनीतिक करियर में यह एक सम्मानजनक समापन होगा। लंबे समय तक मुख्यमंत्री रहकर विकास के नाम पर उनकी पहचान बनी है। उपराष्ट्रपति बनकर वह दिल्ली की राजनीति में एक सम्मानजनक भूमिका में जाएंगे। हालांकि, यह भी सच है कि नीतीश कुमार जैसे नेता अभी चुनाव से पहले बिहार छोड़ना शायद नहीं चाहेंगे। वह जानते हैं कि उनके बिना पार्टी कमजोर होगी और राजनीतिक समीकरण बदल सकते हैं।



ORDER ALL TYPES OF :

- POOJA SAMAGRI,
- AYURVEDIC MEDICINE
- AND PRATIMA.



NOW GET AT YOUR HOME ON
MNDIVINE.COM



ORDER NOW



<https://mndivine.com/>

HELPLINE : 9667793986
(10AM TO 6PM, MON-SAT)





बारिश ने दी राहत जलभराव ने बढ़ाई परेशानी

@ आनंद मीणा

दिल्ली-एनसीआर में बुधवार सुबह हुई मूसलाधार बारिश ने लंबे समय से गर्मी और उमस से परेशान लोगों को राहत जस्र दी, लेकिन यह

राहत कई इलाकों में मुश्किल का कारण भी बन गई। बारिश शुरू होते ही सड़कों पर पानी भरने लगा और जगह-जगह जलभराव से वाहन चालकों को घंटों जाम में फँसे रहना पड़ा। स्कूल-कॉलेज और दफ्तर जाने वाले लोग परेशान दिखे और कई जगह तो लोग पैदल ही पानी में रास्ता पार करते नजर आए।

कांवड़ यात्रा और ट्रैफ़िक का दबाव

बारिश के बीच कांवड़ यात्रा का समय होने से सड़कों पर ट्रैफ़िक का दबाव और बढ़ गया। कांवड़ियों की टोलियां सड़कों से गुजर रही थीं, जिससे ट्रैफ़िक की रफ़तार और धीमी हो गई। हालांकि, इस बार राहत की बात यह रही कि पिछले साल की तरह मिंटो ब्रिज पर पानी नहीं भरा, जिससे वहां जाम की स्थिति नहीं बनी।

मौसम विभाग का अलर्ट और बारिश का आंकड़ा

मौसम विभाग ने पहले से ही दिल्ली-एनसीआर में बारिश के लिए अरेंज और येलो अलर्ट जारी किया था। बुधवार शाम 5:30 बजे तक सफदरजंग में 8.8 मिलीमीटर बारिश दर्ज की गई। इसके अलावा, राजघाट में 22.3, लोधी रोड में 11.2, पूसा में 13.5, नजफगढ़ में 11, रिज में 1.8 और आया नगर व पालम में 1.2 मिलीमीटर बारिश रिकॉर्ड की गई। बारिश के चलते अधिकतम तापमान 30.8 डिग्री सेल्सियस दर्ज हुआ, जो सामान्य से 4.1 डिग्री कम था। वहीं, न्यूनतम तापमान 25.6 डिग्री सेल्सियस रहा, जो सामान्य से 1.7 डिग्री कम था। बीते 24 घंटे में हवा में नमी का स्तर 100 से 88 प्रतिशत के बीच रहा, जिससे मौसम में उंडक महसूस हुई।

कठां-कठां ज्यादा खराब रही स्थिति

शाहदरा, कृष्णा नगर, सूरजमल विहार, ज्वाला नगर, विश्वास नगर, संगम विहार, नजफगढ़ और द्वारका सहित कई इलाकों में बारिश के कारण जलभराव हो गया। नालों की सफाई न होने और पानी की निकासी न होने के कारण सड़कों पर पानी भर गया, जिससे लोगों को काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ा। शिव विहार मेट्रो स्टेशन के पास हालात इतने खराब हो गए कि सड़क पार करने के लिए लोगों ने ट्रैक्टर का सहारा लिया। प्रशासन ने जलभराव से निपटने के लिए पंपों का इस्तेमाल कर पानी निकालने की कोशिश की, पर कई घंटों तक लोगों को परेशानियों का सामना करना पड़ा।

मानसून की सक्रियता बनी हुई

मौसम विभाग के अनुसार, 29 जून से लेकर अब तक दिल्ली में 234.6 मिलीमीटर बारिश हो चुकी है, जबकि सामान्य बारिश का आंकड़ा 217.5 मिलीमीटर होता है।

इसका मतलब है कि अब तक सामान्य से अधिक बारिश हो चुकी है सिफे जुलाई महीने में 10 दिन में सफदरजंग में 127.5 मिलीमीटर बारिश दर्ज की गई, जबकि इस महीने की सामान्य बारिश 143 मिलीमीटर होती है। वहीं, पालम में इस महीने 13 दिनों में 228.6 मिलीमीटर बारिश हुई है, जो कि सामान्य मासिक औसत 150.7 मिलीमीटर से 52 प्रतिशत अधिक है। मौसम विभाग का कहना है कि मानसून की सक्रियता के कारण अगले कुछ दिनों तक दिल्ली-एनसीआर में बारिश का सिलसिला जारी रहेगा। गुरुवार को भी हल्की से मध्यम बारिश की संभावना जताई गई है, और तापमान 31 डिग्री सेल्सियस अधिकतम और 24 डिग्री सेल्सियस न्यूनतम रह सकता है।

जगतानेली राहत की सांस, मगर समस्याओं से जूँझना पड़ा

लंबे समय से उमस और गर्मी से परेशान दिल्ली-एनसीआर के लोगों ने बारिश के बाद राहत की सांस तो

ली, लेकिन जलभराव और ट्रैफ़िक जाम ने उनकी परेशानी बढ़ा दी। कई स्थानों पर जल निकासी की उचित व्यवस्था न होने के कारण लोगों को काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ा। कार्यालय और स्कूल-कॉलेज जाने वाले लोग घंटों ट्रैफ़िक में फँसे रहे, जिससे उन्हें अपने गंतव्य तक पहुंचने में देर हुई। कई इलाकों में जलभराव के कारण छोटे वाहन बंद हो गए और लोगों को सड़कों पर धक्का लगाते भी देखा गया। प्रशासन को मानसून के दौरान जलभराव और ट्रैफ़िक समस्या से निपटने के लिए पहले से तैयार रहने की जरूरत है। नालों की समय पर सफाई और जल निकासी की व्यवस्था मजबूत करने से लोगों को बारिश के दौरान राहत मिल सकती है। मौसम विभाग ने लोगों को चेतावनी दी है कि बारिश के दौरान बिना जारी काम के बाहर न निकलें और सुरक्षित स्थानों पर रहने की सलाह दी है। साथ ही, वाहन चालकों को भी बारिश के दौरान सावधानीपूर्वक गाड़ी चलाने की सलाह दी गई है ताकि दुर्घटनाओं से बचा जा सके।



सावन में आस्था की बारिश

भारी बारिश के बीच भी चारधाम यात्रा में उमड़ रही भक्तों की भीड़

@ मनीष पांडे

उत्तराखण्ड की पहाड़ियों में मानसून की झामझाम बारिश के बीच भी आस्था की डोर कमज़ोर नहीं पड़ी है। सावन मास में जहां देशभर के शिवभक्त जल चढ़ाने मंदिरों में पहुंच रहे हैं, वहाँ उत्तराखण्ड के केदारनाथ धाम में भी श्रद्धालुओं की संख्या लगातार बढ़ रही है। बारिश और भूस्खलन जैसी कठिनाइयों के बावजूद भक्तों के कदम बाबा केदारनाथ के दर पर पहुंच रहे हैं। यहीं नहीं, चारधाम यात्रा में भी इस बार रिकॉर्ड तोड़ तीरथयात्री पहुंच रहे हैं और चारों धामों में श्रद्धा की गूँज सुनाई दे रही है।

केदारनाथ धाम में अब तक 14 लाख 15 हजार से अधिक श्रद्धालु बाबा केदार के दर्शन कर चुके हैं। बारिश और पहाड़ी रास्तों में फिसलन और मलबा गिरने जैसी मुश्किलों के बीच भी लोग सुबह-सुबह लंबी कतारों में खड़े होकर बाबा केदार के दर्शन कर रहे हैं। खास बात यह है कि सावन मास में भगवान शिव को जल चढ़ाने की मान्यता के कारण केदारनाथ में कांवड़िए भी बड़ी संख्या में पहुंच रहे हैं। वे देश के अलग-अलग हिस्सों से पवित्र नदियों से जल लेकर बाबा केदार के शिवलिंग पर जलाभिषेक कर रहे हैं। पहले जहां रोजाना करीब 2-3 हजार लोग दर्शन करने पहुंच रहे थे, वहाँ अब यह संख्या बढ़कर प्रतिदिन 15 हजार तक पहुंच गई है।

मानसून के चलते पहाड़ियों पर बारिश के कारण जगह-जगह भूस्खलन हो रहा है। कई बार मार्ग बाधित होते हैं और श्रद्धालुओं को घंटों रुकना पड़ता है। केदारनाथ हाइवे से लेकर गौरीकुंड तक सड़कें भी बारिश के कारण कमज़ोर हो जाती हैं। इसके बाद भी 19 किलोमीटर लंबा पैदल सफर तय कर बाबा केदारनाथ के दर्शन के लिए श्रद्धालु उत्साहित नजर आते हैं। कई लोग ऐसे भी हैं जो सालों से इस यात्रा में शामिल हो रहे हैं और उनका कहना है कि इस बार बारिश में बाबा केदार के दर पर पहुंचने का अनुभव उनके जीवन का सबसे खास अनुभव है। सावन मास में बाबा शंकर को जल चढ़ाने की परंपरा को निभाने के लिए भक्तों की आस्था हार कठिनाई को पार कर रही है।

इस यात्रा का सबसे बड़ा लाभ स्थानीय व्यापारियों और होटल व्यवसायियों को भी मिल रहा है। मानसून के बावजूद होटल, दुकानें और घोड़ा-खच्चर सेवाओं में तेजी आ गई है। तीरथ पुरोहितों का कहना है कि सावन में केदारनाथ यात्रा पर भक्तों की संख्या में हमेशा बढ़ोतारी होती है और इस बार भी ऐसा ही हुआ है। उनका कहना है कि बाबा केदार की कृपा से भक्त अपने जीवन में सुख-समृद्धि और शांति की कामना लेकर यहां पहुंचते हैं और इसी आस्था के चलते भक्त बिना किसी डर के यात्रा में निकलते हैं।

केदारनाथ के साथ-साथ चारधाम यात्रा भी इस बार रिकॉर्ड तोड़ रही है। पर्यटन विभाग के अनुसार गंगोत्री, यमुनोत्री, केदारनाथ और बद्रीनाथ धाम में भारी संख्या में श्रद्धालु पहुंच रहे हैं। अब तक 39 लाख से अधिक तीरथयात्री चारधाम यात्रा में दर्शन कर चुके हैं, जो पिछले सालों की तुलना में एक नया रिकॉर्ड है। यात्रा के लिए अब तक 47 लाख 27 हजार 619 श्रद्धालुओं ने ऑनलाइन और ऑफलाइन पंजीकरण करवा लिया है। इसके अलावा



हेमकुंड साहिब के लिए भी 2 लाख 16 हजार 960 श्रद्धालुओं ने पंजीकरण कराया है। इस तरह कुल मिलाकर चारधाम यात्रा और हेमकुंड साहिब यात्रा के लिए अब तक 49 लाख 41 हजार 527 श्रद्धालुओं ने पंजीकरण करवा कर अपनी आस्था का परिचय दिया है।

इस बार यात्रा को सुचारू और सुरक्षित बनाने के लिए राज्य सरकार और प्रशासन ने भी विशेष इंतजाम किए हैं। रास्तों पर जगह-जगह पुलिस, आपदा प्रबंधन दल, डॉक्टरों की टीम और स्वच्छता के इंतजाम किए गए हैं। बारिश में किसी प्रकार की दिक्कत होने पर यात्रियों को सुरक्षित स्थानों पर रोका जाता है और रास्ता साफ होने के बाद यात्रा फिर से शुरू कराई जाती है। गौरीकुंड से केदारनाथ तक पैदल मार्ग में लैंडस्लाइड जोन की निगरानी की जा रही है और आवश्यकता पड़ने पर मार्ग को बंद कर दिया जाता है ताकि भीड़ का दबाव एक साथ न पड़े।

उत्तराखण्ड में भारी बारिश और भूस्खलन की चुनौतियों के बीच भक्तों का जोश और आस्था ही है जो उन्हें बाबा केदार और चारधाम की ओर खींच रही है। इस समय यात्रा में पहुंचे हर भक्त के चेहरे पर विश्वास, श्रद्धा और आत्मिक

शांति की झलक साफ दिखाई देती है। यात्रा में शामिल होने वाले लोग कहते हैं कि बारिश की हर बूँद उनके लिए बाबा का आशीर्वाद है और केदारनाथ की ओर बढ़ते हर कदम पर उन्हें आस्था की ताकत मिलती है।

सावन मास में केदारनाथ और चारधाम यात्रा पर श्रद्धालुओं की भीड़ यह सवित कर रही है कि आस्था हर कठिनाई पर भारी होती है। पहाड़ों पर फिसलन के बावजूद भक्तों के कदम नहीं रुक रहे हैं। इस यात्रा ने एक बार फिर यह संदेश दिया है कि आस्था और विश्वास में असीम ताकत होती है, जो हर बाधा को पार कर भगवान के दर तक पहुंचा देती है। बाबा केदारनाथ और चारधाम की यह यात्रा न केवल धार्मिक यात्रा है, बल्कि जीवन में आस्था की परीक्षा भी है, जिसमें हर भक्त सफल होकर लौट रहा है।



संसद का मानसून सत्र, 2025: इंडिया गठबंधन की रणनीति और बड़े मुद्दे

सं

संसद का मानसून सत्र, जो 21 जुलाई 2025 से शुरू हो रहा है, भारतीय राजनीति में एक बड़ा इवेंट होने वाला है। इंडिया गठबंधन, जिसमें 24 विपक्षी दल शामिल हैं, ने इस सत्र में सरकार को धेरने की पूरी तैयारी कर ली है। ये गठबंधन कई बड़े और संवेदनशील मुद्दों को उठाने जा रहा है, जैसे पहलगाम आतंकी हमला, अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के युद्धविराम के दावे, और बिहार में वोटर लिस्ट की विशेष गहन संशोधन (SIR) प्रक्रिया। ये मुद्दे न सिर्फ राष्ट्रीय सुरक्षा और लोकतंत्र से जुड़े हैं, बल्कि देश के 140 करोड़ लोगों की भावनाओं और अधिकारों को भी प्रभावित करते हैं। इस लेख में हम इन मुद्दों को गहराई से समझेंगे, इंडिया गठबंधन की रणनीति का विश्लेषण करेंगे, और यह देखेंगे कि ये सत्र भारत की राजनीति और जनता के लिए क्या मायने रखता है।

पहलगाम आतंकी हमला: राष्ट्रीय सम्मान का सवाल
22 अप्रैल 2025 को जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुआ आतंकी हमला, जिसमें 26 लोग मारे गए, इंडिया गठबंधन के लिए सबसे बड़ा मुद्दा है। विपक्ष का कहना है कि इन्हें महीनों बाद भी हमले के दोषियों को सजा नहीं मिली है, जो राष्ट्रीय सुरक्षा और खुफिया तंत्र की नाकामी को दर्शाता है। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता प्रमोद तिवारी ने इसे “राष्ट्रीय सम्मान” से जोड़ा और कहा कि सरकार की चुप्पी और निष्क्रियता चिंताजनक है। उन्होंने यह भी बताया कि उपराज्यपाल ने इस हमले को खुफिया नाकामी माना है, फिर भी कोई ठोस कार्रवाई नहीं हुई।

विपक्ष इस मुद्दे को संसद में जोर-शोर से उठाने की योजना बना रहा है। उनका सवाल है: “आतंकियों को पकड़ा क्यों नहीं गया? सरकार इस पर चुप क्यों है?” यह मुद्दा न सिर्फ जम्मू-कश्मीर की सुरक्षा से जुड़ा है, बल्कि पूरे देश की जनता की भावनाओं को भी छूता है। इंडिया गठबंधन का मानना है कि सरकार को इस पर जवाब देना होगा, क्योंकि यह 140 करोड़ लोगों के सम्मान का सवाल है।

इसके अलावा, विपक्ष ऑपरेशन सिंदूर को भी उठाएगा, जो पहलगाम हमले के बाद पाकिस्तान में आतंकी ठिकानों पर भारत की सटीक कार्रवाई थी। लेकिन विपक्ष का कहना है कि इस ऑपरेशन को समय से पहले रोक दिया गया, जिसके पीछे अमेरिकी दबाव की बात सामने आ रही है। यह हमें अगले बड़े मुद्दे की ओर ले जाता है।

ट्रम्प का युद्धविराम दावा: भारत की संप्रभुता पर सवाल

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने कई बार (कम से कम 24 बार) दावा किया है कि उन्होंने भारत और पाकिस्तान के बीच युद्धविराम करवाया। इंडिया गठबंधन इस दावे को भारत की संप्रभुता पर सवाल मानता है। प्रमोद तिवारी ने कहा, “हम एक संप्रभु राष्ट्र हैं। कोई बाहरी ताकत हमारी नीतियों को प्रभावित नहीं कर सकती। फिर भी सरकार ट्रम्प के दावों पर चुप क्यों है?”



विपक्ष का आरोप है कि ऑपरेशन सिंदूर, जो आतंकी ठिकानों को नष्ट करने के लिए शुरू किया गया था, को अमेरिकी दबाव में रोक दिया गया। यह दावा न सिर्फ भारत की विदेश नीति पर सवाल उठाता है, बल्कि यह भी दिखाता है कि सरकार इस मुद्दे पर जवाब देने से बच रही है। इंडिया गठबंधन इस सत्र में प्रधानमंत्री से मांग करेगा कि वे संसद में इस पर स्पष्ट जवाब दें।

यह मुद्दा इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि यह भारत की स्वतंत्र विदेश नीति और राष्ट्रीय गैरव से जुड़ा है। विपक्ष का कहना है कि अगर ट्रम्प के दावे गलत हैं, तो सरकार को इसे खारिज करना चाहिए। लेकिन अगर इसमें कोई सच्चाई है, तो यह भारत की संप्रभुता के लिए खतरा है। इस मुद्दे पर संसद में तीखी बहस की उम्मीद है, क्योंकि यह न सिर्फ भारत-पाकिस्तान संबंधों को प्रभावित करता है, बल्कि भारत-अमेरिका संबंधों पर भी सवाल उठाता है। बिहार में वोटर लिस्ट संशोधन: लोकतंत्र पर खतरा?

बिहार में विशेष गहन संशोधन (SIR) प्रक्रिया को लेकर इंडिया गठबंधन ने गहरी चिंता जताई है। विपक्ष का आरोप है कि यह प्रक्रिया वोटरों के अधिकारों को छीनने की साजिश है। तृणमूल कांग्रेस के नेता अधिषेध बनर्जी ने इसे “बैकडोर NRC” करार दिया और कहा कि बीजेपी “E-Square” रणनीति का इस्तेमाल कर रही है—यानी “ED विपक्षी नेताओं के लिए और EC (चुनाव आयोग) वोटरों के लिए।”

विपक्ष का कहना है कि बिहार में SIR प्रक्रिया के जरिए वोटर लिस्ट से कई लोगों के नाम हटाए जा रहे हैं, जो खासकर गरीब और हाशिए पर रहने वाले समुदायों को प्रभावित कर रहा है। इसे “वोटबंदी” कहकर विपक्ष ने इसे नोटबंदी से जोड़ा और इसे “अधोविष्ट आपातकाल” का हिस्सा बताया।

यह मुद्दा इसलिए गंभीर है क्योंकि यह सीधे तौर पर लोकतंत्र की नींव—यानी वोट देने के अधिकार—से जुड़ा है। विपक्ष का कहना है कि अगर बिहार में यह प्रक्रिया सफल रही, तो इसे अन्य राज्यों में भी लागू किया जा

सकता है। कांग्रेस ने पहले ही महाराष्ट्र और हरियाणा में भी ऐसी ही गड़बड़ियों का आरोप लगाया है। इस सत्र में विपक्ष चुनाव आयोग की भूमिका और निष्पक्षता पर भी सवाल उठाएगा, खासकर बिहार विधानसभा चुनाव से पहले।

विदेश नीति से लेकर सामाजिक व्याय तक

इंडिया गठबंधन ने अपनी रणनीति में सिर्फ सुरक्षा और लोकतंत्र ही नहीं, बल्कि कई अन्य मुद्दों को भी शामिल किया है। इनमें विदेश नीति की “नाकामी”, गाजा संकट, और भारत-चीन संबंध शामिल हैं। विपक्ष का कहना है कि सरकार की विदेश नीति कमजोर हो रही है, और इसका असर भारत की वैश्विक छवि पर पड़ रहा है।

इसके अलावा, विपक्ष अनुसूचित जाति (SC), अनुसूचित जनजाति (ST), महिलाओं, और अल्पसंख्यकों के खिलाफ बढ़ती हिंसा और अत्याचारों को भी उठाएगा। सीपीआई(एम) के नेता एम.ए. बेहों ने कहा कि बेरोजगारी, महंगाई, और किसानों की समस्याओं जैसे “जनता के मुद्दों” पर भी ध्यान देना जरूरी है।

जम्मू-कश्मीर को पूर्ण राज्य का दर्जा देने की मांग भी विपक्ष का एक बड़ा एजेंडा है। जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने पहलगाम हमले को राज्य के सुरक्षा हालात से जोड़ा और कहा कि पूर्ण राज्य का दर्जा न मिलना एक बड़ी समस्या है।

विपक्ष ने यह भी मांग की है कि संसद में इन सभी मुद्दों पर चर्चा हो और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी स्वयं जवाब दें। प्रमोद तिवारी ने कहा, “संसद विदेश यात्राओं से ज्यादा महत्वपूर्ण है।” यह बयान सरकार पर दबाव बनाने की रणनीति का हिस्सा है।

इंडिया गठबंधन की एकजुटता: चुनावीय और संभावनाएं

इंडिया गठबंधन की यह रणनीति सिर्फ सरकार को धेरने की कोशिश नहीं है, बल्कि यह विपक्ष की एकजुटता को भी दर्शाती है। 24 दलों ने इस वर्चुअल मीटिंग में हिस्सा

लिया, जिसमें कांग्रेस, तृणमूल कांग्रेस, डीएमके, राजद, सपा, एनसीपी (शरद पवार), शिवसेना (यूबीटी), जेएमएम, सीपीआई, और सीपीआई(एम) जैसे बड़े दल शामिल थे। लेकिन आम आदमी पार्टी (AAP) की अनुपस्थिति ने सवाल खड़े किए हैं, क्योंकि AAP पहले इस गठबंधन का हिस्सा थी।

विपक्ष की एकजुटता को बनाए रखना आसान नहीं है। कई दलों के अपने क्षेत्रीय और वैचारिक मतभेद हैं। फिर भी, इस मीटिंग में सभी नेताओं ने एक स्वर में सरकार के खिलाफ रणनीति बनाने पर सहमति जताई। राहुल गांधी ने कहा कि विपक्ष को “एक आवाज” में बोलना होगा, ताकि सरकार जनता के प्रति अपनी जवाबदेही को नजरअंदाज न कर सके।

यह सत्र न सिर्फ सरकार के लिए, बल्कि इंडिया गठबंधन के लिए भी एक बड़ा टेस्ट है। अगर विपक्ष अपनी एकता और रणनीति को संसद में प्रभावी ढंग से लागू कर पाया, तो यह भविष्य में और मजबूत हो सकता है। लेकिन अगर आंतरिक मतभेद सामने आए, तो यह गठबंधन कमजोर भी पड़ सकता है।

संसद सत्र और भारत का भविष्य

संसद का मानसून सत्र 2025 न सिर्फ राजनीतिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है, बल्कि यह देश की जनता के लिए भी कई बड़े सवालों का जवाब देसकता है। पहलगाम हमले पर सरकार की चुप्पी, ट्रम्प के दावों पर उसका रुख, और बिहार में वोटर लिस्ट की गड़बड़ियां—ये सभी मुद्दे भारत के लोकतंत्र, सुरक्षा, और संप्रभुता से जुड़े हैं। इंडिया गठबंधन की रणनीति इन मुद्दों को उठाकर सरकार को जवाबदेह बनाने की है, लेकिन यह देखना दिलचस्प होगा कि सरकार इसका जवाब कैसे देती है।

विपक्ष की एकजुटता और उसकी रणनीति इस सत्र को एक हाई-वोल्टेज ड्रामा बना सकती है। लेकिन यह ड्रामा सिर्फ राजनीतिक स्कोर सेटल करने के लिए नहीं, बल्कि देश के 140 करोड़ लोगों की चिंताओं को संसद

सोमवार, 21 जुलाई 2025, विक्रम संवत् 2080

क्या हमारी व्यायपालिका वाकई सही दिशा में है?

अग्रीय यह बात पता चली कि मुंबई हाई कोर्ट के फैसले पर सुप्रीम कोर्ट में बहुत बड़ी बीमारी घुस गई है अव्यथा क्या कारण है की एक पूर्व व्यायाधीश इस तरह वर्तमान उच्च व्यायालय को अपनी उपस्थिति और अपने तर्कों से इतना गुमराह करने में सफल हो जाता है। इस निर्णय में जिस पूर्व जज ने अपने प्रभाव या तर्कों का प्रयोग किया वह पहले भी कई जगह इस तरह के व्यायिक प्रक्रिया को उलटने का सफल प्रयोग कर चुका है। मैं यह तो नहीं कह सकता की व्यायपालिका अपने निर्णय में उससे व्यक्तिगत रूप से प्रभावित हुई था उसके तर्कों में ऐसा दम था लेकिन इन दोनों में से जो भी बात सब रही हो दोनों का उत्तर तो हमारी व्यायिक प्रणाली को ही देना चाहिए। यह कोई इतना साधारण मामला नहीं था जिससे साधारण तरीके से स्वीकार कर लिया जाए। हम इसके लिए किसी व्यायाधीश को दोषी नहीं कह सकते हमें अपनी पूरी की पूरी व्याय व्यवस्था पर फिर से विचार करना चाहिए। हमारी व्यायिक प्रणाली इस तरह वकीलों और व्यायाधीशों के लिए यदि खेल का मैदान बन जाती है और वह दोनों इस खेल से अपनी दुकानदारी चलाते हैं तो इस तरह की व्याय व्यवस्था में बदलाव आवश्यक है। मुंबई उच्च व्यायालय का निर्णय स्पष्ट रूप से गलत दिख रहा था। सुप्रीम कोर्ट ने इसमें रुकाव किया यह सही है लेकिन यह सही नहीं है कि हमारी व्यायिक प्रणाली ठीक काम कर रही है। यह कैसी व्यायपालिका है जो इस तरह का सुधार नहीं कर पाती कि जिस व्यक्ति को सेशंस कोर्ट ने अपराधी घोषित कर दिया है उस व्यक्ति को ही स्वयं को निर्दोष सिद्ध करने की जिम्मेदारी होनी चाहिए यही वास्तव में व्याय होगा। अपील करता को यह सिद्ध करना होगा कि वह निर्दोष है इसलिए लंबे इस दोषपूर्ण व्याय प्रणाली को एक आदर्श व्याय प्रणाली में बदलने की दिशा में सोचना चाहिए। हम लोगों ने इस संबंध में भी कल रात गंभीरता से विचार किया है और हम यह कह सकते हैं कि हम लोगों के द्वारा जो व्यायिक सुधार की शुरुआत बताई गई है वह निर्दोष हो सकती है। इस सुधार से हम व्याय को अधिक सुलभ और निश्चित बना सकते हैं।

बजरंग मुनि

जुबानी तीर

“



अगर नीतीश कुमार उप राष्ट्रपति बनते हैं तो इससे अच्छी बात और क्या होगी, बिहार के लिए शुभ होगा।

हरिभूषण ठाकुर (भाजपा विधायक)

“



बीजेपी हमेशा नीतीश को हटाने के मौके में रहती है, उप राष्ट्रपति बनाना भी उसी साजिश का हिस्सा हो सकता है।

अनुराधा इस्लाम शाहीन (राजद विधायक)

“



यह केंद्र का फैसला होगा, लेकिन बिहार से कोई उप राष्ट्रपति बनता है तो खुशी की बात होगी।

डॉ. प्रेम कुमार (भाजपा मंत्री)



स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. महिमा मक्कर द्वारा एच०टी० मीडिया, प्लॉट नं. ८, उद्योग विहार, ग्रेटर नोएडा-९ उत्तर प्रदेश से मुद्रित एवं जी. एफ. ५/११५, गली नं. ५ संत निरंकारी कालोनी, दिल्ली-११०००९ से प्रकाशित। संपादक: महिमा मक्कर, RNI No. DELHI/2019/77252, संपर्क ०११-४३५६३१५४

विज्ञापन एवं वार्षिक स्पष्टक्रियान के लिए ऑफिस के पाते पर सम्पर्क करें या फिर इन नम्बरों - ९६६७७९३९८७ या ९६६७७९३९८५ पर बात करें या इस पर media@bharatshri.com ईमेल करें।

धनखड़ के बाद कौन?

@ अनुराग पाठक

जगदीप धनखड़ के उप राष्ट्रपति पद से इस्तीफा देने के बाद राजनीतिक गलियारों में अचानक सरगर्मी बढ़ गई है। वैसे तो एनडीए के पास संसद में पूरा संख्याबल है और नए उप राष्ट्रपति के चयन में कोई तकनीकी अड़चन नहीं आने वाली, लेकिन ऐसे वक्त में जब देश में राजनीतिक, सामाजिक और संवैधानिक बहसों का दौर चल रहा है, उप राष्ट्रपति का अचानक इस्तीफा देना स्वाभाविक रूप से कई सवाल खड़े करता है। धनखड़ के इस्तीफे के साथ ही यह चर्चा तेज हो गई है कि उनके उत्तराधिकारी के तौर पर किसे जिम्मेदारी सौंपी जाएगी।

पश्चिम बंगाल के राज्यपाल से उप राष्ट्रपति बनने वाले जगदीप धनखड़ का कार्यकाल 2027 तक का था, लेकिन महज तीन साल में उनका पद छोड़ना अप्रत्याशित कदम माना जा रहा है। उनके इस्तीफे की वजह स्वास्थ्य कारण बताए गए, मगर इसके पीछे के राजनीतिक और संस्थागत पहलुओं की चर्चा स्वाभाविक है। उप राष्ट्रपति का पद न केवल राज्यसभा के सभापति के तौर पर विधायी कामकाज का महत्वपूर्ण केंद्र होता है, बल्कि यह सरकार और विपक्ष के बीच संवाद बनाए रखने में भी एक सेतु का काम करता है। धनखड़ के कार्यकाल में राज्यसभा की कार्यवाही के दौरान विपक्ष से उनके कई बार तीखे टकराव हुए, और कुछ मुद्दों पर सरकार भी उनकी टिप्पणियों से असहज हुई। ऐसे में उनका इस्तीफा न केवल एक प्रशासनिक प्रक्रिया भर है, बल्कि यह संसद की राजनीति के भीतर चल रही हलचलों की भी झलक दिखाता है।

अब जब यह पद खाली हुआ है, तब नए उप राष्ट्रपति के चयन की प्रक्रिया केवल एक संवैधानिक आवश्यकता न होकर राजनीतिक समीकरणों से भी जुड़ जाती है। उप राष्ट्रपति के तौर पर बीजेपी के पास कई वरिष्ठ नेताओं की सूची है, जिनकी निर्विवाद छवि और दमदार व्यक्तित्व उन्हें इस जिम्मेदारी के लिए उपयुक्त बनाती है। बीते उदाहरणों को देखा जाए तो ऐसे वैकेन्या नायदू और धनखड़ दोनों ही अपनी सधी हुई राजनीतिक यात्रा और संगठन में मजबूत पकड़ के कारण इस पद पर पहुंचे थे। पार्टी की ओर से यह संकेत मिल रहा है कि नए उप राष्ट्रपति के लिए भी ऐसा ही कोई चेहरा चुना जाएगा, जो संसद में सरकार के विधायी एजेंडे को प्रभावी ढंग से आगे बढ़ा सके और संसद में अनुशासन बनाए रखने में सक्षम हो। इस संदर्भ में हरिवंश का नाम भी संभावित उम्मीदवारों में देखा जा रहा है। जेडीयू कोटे से राज्यसभा के डिप्टी

चेयरमैन के रूप में हरिवंश ने 2020 से जिस तरह से सदन की कार्यवाही संभाली है, उसने सरकार का भरोसा जीतने में उन्हें मदद की है। उनके नाम पर विचार करने से जेडीयू और एनडीए के भीतर संतुलन भी बना रहेगा। हालांकि, उनके नाम पर अंतिम मुहर लगना अभी बाकी है, और बीजेपी नेतृत्व द्वारा अन्य नामों पर भी मंथन किए जाने की संभावना है।

धनखड़ का इस्तीफा एक ऐसे समय आया है जब संसद में सरकार और विपक्ष के बीच इलाहाबाद हाईकोर्ट के जज यशवंत वर्मा को हटाने के प्रस्ताव को लेकर विवाद पैदा हुआ था। विपक्ष की ओर से प्रयोजित नोटिस धनखड़ को सौंपा गया था, और उन्होंने इसे सदन में उठाया था। यह घटना सत्ता पक्ष के लिए अप्रत्याशित और असहज थी, जिसने विपक्ष को भरोसे में लिए बिना इस तरह के मुद्दे पर आगे बढ़ने के लिए सवाल खड़े किए। धनखड़ का इस मुद्दे को सार्वजनिक रूप से उठाना उनकी संवैधानिक जिम्मेदारी का हिस्सा था, लेकिन इसके बाद उनके इस्तीफे को इस घटनाक्रम को और ज्यादा महत्वपूर्ण बना दिया। इस घटनाक्रम ने यह भी दिखाया कि उप राष्ट्रपति जैसे संवैधानिक पद पर बैठा व्यक्ति यदि अपनी जिम्मेदारी निभाते हुए किसी मुद्दे को उठाता है, तो उससे राजनीतिक समीकरण किस तरह प्रभावित हो सकते हैं। बीजेपी और एनडीए के लिए नया उप राष्ट्रपति चुनना एक बड़ा मौका भी है और एक चुनावी भी है। जहां एक ओर यह अवसर है कि संसद में कामकाज को सहज ढंग से चलाने के लिए एक मजबूत नेतृत्व लाया जाए, वहीं दूसरी ओर यह चुनावी भी है कि वर्तमान राजनीतिक माहौल में ऐसा चयन किया जाए जिससे विपक्ष को मुद्दा न मिले और विधायी कार्य में बाधा न आए। एनडीए को यह सुनिश्चित करना होगा कि नया उप राष्ट्रपति निविरोध तरीके से चुना जाए ताकि संसद में विपक्ष के साथ टकराव कम हो और कामकाज तेजी से आगे बढ़ सके।

धनखड़ के इस्तीफे ने यह भी याद दिलाया कि उप राष्ट्रपति का पद केवल शोभा का नहीं बल्कि संसद की कार्यवाही के संचालन और देश में लोकतांत्रिक संवाद बनाए रखने में उसकी एक अहम भूमिका होती है। ऐसे में नए उप राष्ट्रपति के चयन में केवल राजनीतिक समीकरण ही नहीं, बल्कि उनके अनुभव, नेतृत्व क्षमता और उनकी छवि भी महत्वपूर्ण कारक होंगे। इसके अलावा यह भी देखा जाएगा कि वह विपक्ष के साथ संतुलन बनाकर कैसे सदन की गिरिया को कायम रखते हैं और लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा करते हैं। यह साफ है कि एनडीए अपने मजबूत संख्याबल के कारण इसी भी प्रत्याशी को उप राष्ट्रपति बनवाने में सक्षम है, लेकिन वह इस पद पर ऐसा व्यक्ति ही लाना चाहेगी जो संसद में उसकी प्राथमिकताओं को आगे बढ़ा सके।

घुटनों के दर्द से राहत चाहते हैं? आजमाएं ये आयुर्वेदिक तरीके

By डॉ महिमा मक्कर

घुटनों का दर्द आज हर उम्र के लोगों की आम समस्या बन गया है। पहले यह समस्या बुजुर्गों तक सीमित रहती थी, लेकिन अब खराब लाइफस्टाइल, बैठने का तरीका और पोषण की कमी से यह युवाओं में भी तेजी से बढ़ रही है। कई लोग दर्द से राहत के लिए तुरंत पेन किलर पर निर्भर हो जाते हैं, जिससे कुछ देर के लिए आराम तो मिलता है, लेकिन समस्या जड़ से खत्म नहीं होती। आयुर्वेद में घुटनों के दर्द के लिए कई ऐसे उपाय बताए गए हैं, जो प्राकृतिक तरीके से दर्द को जड़ से ठीक करने में मदद करते हैं।

घुटनों में दर्द क्यों होता है?

आयुर्वेद के अनुसार, शरीर में वात दोष बढ़ने से जोड़ों में दर्द और अकड़न की समस्या शुरू होती है। यह वात दोष तब बढ़ता है जब शरीर में गैस, कब्ज़, आहार में पौष्टिकता की कमी, पानी की कमी, अधिक देर बैठना या एक ही पोजीशन में लंबे समय तक बैठे रहना या खड़े रहना होता है। इसके अलावा मोटापा, बढ़ती उम्र और हड्डियों में कैल्शियम की कमी भी घुटनों के दर्द का कारण बनती है।

दर्द को रोकने के लिए सबसे पहले जीवनशैली सुधारे। आयुर्वेद कहता है कि दर्द को दूर करने के लिए सबसे पहले अपने आहार और दिनचर्या को सुधारना जरूरी है। अगर आप तैलीय, मसालेदार और भारी भोजन का अधिक सेवन करते हैं तो यह वात दोष को बढ़ा सकता है। इसके बजाय हल्का और सुपाच्य भोजन लें। खाने में हरी सब्जियां, मौसमी फल, दूध, छाल और पर्याप्त मात्रा में पानी शामिल करें। आयुर्वेद में शरीर को सक्रिय रखने की सलाह दी गई है। यदि घुटनों में दर्द रहता है तो आपको भारी कसरत करने की आवश्यकता नहीं है, बल्कि रोजाना 20-30 मिनट की हल्की सैर और आसान स्ट्रेचिंग करनी चाहिए। इससे जोड़ों में रक्त का संचार सही रहता है और दर्द कम होने लगता है।

आयुर्वेदिक तेल से मालिश करें

घुटनों के दर्द को दूर करने के लिए आयुर्वेद में नियमित तेल मालिश को बेहद महत्वपूर्ण माना गया है। नारियल तेल, सरसों का तेल या महाबल तेल से घुटनों पर हल्के हाथ से रोजाना 10-15 मिनट तक मालिश करें। इससे रक्त संचार बढ़ता है, वात दोष कम होता है और दर्द में आराम मिलता है। मालिश के बाद घुटनों पर गुनगुनी सेंकाई करने से भी दर्द में तुरंत राहत मिलती है।

हर्बल उपाय और घरेलू नुस्खे

आयुर्वेद में कई जड़ी-बूटियों का उल्लेख है जो घुटनों के दर्द को ठीक करने में मदद करती हैं। इनमें से कुछ मुख्य उपाय इस प्रकार हैं:-

मेथी दाना: मेथी दाना में एंटी-इंफ्लेमेटरी गुण होते



हैं। रोजाना सुबह खाली पेट एक चम्मच मेथी दाना पानी के साथ खाने से जोड़ों के दर्द में आराम मिलता है। आप चाहें तो मेथी दाना को भूनकर उसका पाउडर बनाकर दूध या पानी के साथ भी ले सकते हैं।

अश्वगंधा: यह वात दोष को कम करने और हड्डियों को मजबूत बनाने में मदद करती है। डॉक्टर की सलाह पर अश्वगंधा का चूर्ण दूध के साथ लेना फायदेमंद होता है।

अजवाइन: अजवाइन भी घुटनों के दर्द में बेहद लाभकारी होती है। आप अजवाइन को पानी में उबालकर उसका सेवन कर सकते हैं। इसके अलावा अजवाइन का लेप बनाकर घुटनों पर लगाने से भी राहत मिलती है।

हल्दी और दूध: हल्दी में करक्यूमिन होता है, जो दर्द और सूजन को कम करता है। रोजाना रात को सोने से पहले हल्दी वाला दूध पीने से घुटनों के दर्द में राहत मिलती है।

गिलोय: गिलोय वात और आम दोष को दूर करता है। गिलोय का रस रोजाना सुबह लेने से घुटनों के दर्द में आराम मिलता है।

गर्म पानी से सेंकाई करें

आयुर्वेद में घुटनों में दर्द और अकड़न होने पर गर्म पानी की थैली से सेंकाई करने की सलाह दी जाती है। इससे दर्द और सूजन में तुरंत राहत मिलती है। ध्यान रखें

कि ज्यादा देर तक गर्म सेंकाई न करें और अगर सूजन ज्यादा है तो डॉक्टर से सलाह लें।

वजन नियंत्रित रखें

अधिक वजन घुटनों पर दबाव बढ़ाता है, जिससे दर्द और बढ़ जाता है। इसलिए अपने वजन को नियंत्रित रखने की कोशिश करें। इसके लिए नियमित रूप से योग, प्राणायाम और हल्की एक्सरसाइज करें और तैलीय और जंक फूड से परहेज करें। कुछ आयुर्वेदिक औषधियां भी घुटनों के दर्द में लाभकारी होती हैं, जैसे महायोगराज गुग्नुल, त्रिफला, दशमूल और सिंधुवादि तेल। इनका सेवन डॉक्टर की सलाह से करना चाहिए। ये औषधियां हड्डियों को मजबूत करने, वात दोष को कम करने और सूजन को घटाने में मदद करती हैं।

योग और प्राणायाम से दर्द में राहत

योग के नियमित अभ्यास से शरीर में लचीलापन आता है और घुटनों का दर्द कम होता है। वज्ञासन, ताड़ासन और भुजंगासन जैसे आसान योगासन घुटनों के दर्द में लाभकारी होते हैं। प्राणायाम करने से भी शरीर में ऑक्सीजन का स्तर बढ़ता है, जिससे सूजन और दर्द में राहत मिलती है।

ज्यादा देर तक एक जगह बैठें

लंबे समय तक एक ही पोजीशन में बैठना घुटनों में दर्द को बढ़ा सकता है। इसलिए हर 30-40 मिनट में उठकर थोड़ा टहल लें या पैरों को स्ट्रेच करें। इससे जोड़ों में जकड़न नहीं होगी और दर्द कम होगा। शरीर में पानी की कमी से भी जोड़ों में अकड़न और दर्द बढ़ सकता है। रोजाना 8-10 गिलास पानी पीने की आदत डालें। इससे शरीर से विषाक्त पदार्थ बाहर निकलते हैं और जोड़ों में लुब्रिकेशन बना रहता है।

कब डॉक्टर से संपर्क करें

यदि आयुर्वेदिक उपायों और घरेलू नुस्खों के बाद भी दर्द में आराम न मिले, सूजन बढ़ जाए या चलने-फिले में कठिनाई होने लगे, तो तुरंत डॉक्टर से संपर्क करें। कभी-कभी हड्डियों में गंभीर समस्या या गठिया की स्थिति भी घुटनों के दर्द का कारण हो सकती है, जिसका इलाज समय पर करवाना जरूरी है। घुटनों का दर्द एक आम समस्या है, लेकिन इसे नजरअंदाज करना ठीक नहीं है। आयुर्वेद में बताए गए उपाय जैसे तेल मालिश, गर्म सेंकाई, हर्बल उपचार, संतुलित आहार, योग और नियमित हल्का व्यायाम इस दर्द को दूर करने में मदद करते हैं। साथ ही, अपने वजन को नियंत्रित रखना और रोजाना पर्याप्त पानी पीना भी जरूरी है।

संत धरमदास: रामरस के सच्चे साधक

संत धरमदास एक ऐसे महान संत थे, जिन्होंने अपने जीवन को राम के चरणों में समर्पित कर दिया। उनकी साधना और भक्ति की गहराई इतनी थी कि वह हर भक्त के लिए प्रेरणा का स्रोत बन गए। संत कबीर के प्रमुख शिष्यों में से एक, धरमदास ने न केवल उनके उपदेशों को आत्मसात किया, बल्कि उसे जन-जन तक पहुँचाने का कार्य भी किया। उनका जीवन हमें सिखाता है कि सच्ची भक्ति वही है, जो अहंकार को त्यागकर, पूर्ण समर्पण के साथ राम के प्रेम में डूब जाए। यह लेख संत धरमदास के जीवन, उनकी साधना, और उनके द्वारा रचित कार्यों पर प्रकाश डालता है।

प्रारंभिक जीवन और भक्ति की शुरुआत

संत धरमदास का जन्म संवत् 1475 (लगभग 1418ई.) में बधोगढ़ में हुआ था। वह कसौधन बनिया वंश से थे और उनके परिवार में धन-सम्पत्ति की कोई कमी नहीं थी। वह एक सफल व्यापारी थे, लेकिन उनका मन हमेशा से भक्ति और साधु-संतों की संगति में रमता था। बचपन से ही वह सत्त्विक प्रवृत्ति के थे और साधुओं की सेवा, शास्त्रों का अध्ययन, और भगवान की पूजा में उहें अपार आनंद मिलता था।

उनके जीवन का एक सुंदर चित्रण ग्रंथ अमरसुख निधान में मिलता है, जहाँ लिखा है:

धरमदास बधो के बानी, प्रेमप्रीति भक्ति में जानी।

सालिगराम की सेवा कर्द्द, दया-धरम बहुतै चित धरई।

भगवत गीता बहुत कहाई, प्रेमभक्ति रस पीये अधाई।

इससे साफ पता चलता है कि धरमदास का हृदय बचपन से ही भगवान के प्रति प्रेम और अद्वा से भरा था। वह श्रीमद्भगवद्गीता के प्रति विशेष अद्वा रखते थे और हरि की आराधना में घंटों डूबे रहते थे। उनकी भक्ति इतनी गहरी थी कि वह हर पल अपने प्रियतम राम के चरणों में समर्पित रहते थे।

संत कबीर से मुलाकात: जीवन का गोड़

धरमदास का जीवन तब पूरी तरह बदल गया, जब वह तीर्थयात्रा के लिए मथुरा पहुँचे। वहाँ उनकी मुलाकात संत कबीर से हुई। कबीर के सत्संग और उनके आत्मज्ञान भरे उपदेशों ने धरमदास के हृदय को गहरे तक छू लिया। कबीर की वाणी में वह शक्ति थी, जो मन को झकझोर देती थी। उन्होंने धरमदास को समझाया कि जब तक मन में सकाम भाव रहता है, तब तक सच्चा सुख नहीं मिल सकता। निष्काम भक्ति ही वह रास्ता है, जो राम के करीब ले जाता है।

कबीर ने कहा, “आत्मतत्त्व का रहस्य समझना आसान नहीं। गुरु की कृपा के बिना निर्णुण परमात्मा का भेद नहीं खुलता। राम को कभी नहीं छोड़ना चाहिए, चाहे जीवन चला जाए, पर राम का साथ हमेशा बना रहना चाहिए।” इन शब्दों ने धरमदास के मन को झकझोर दिया। वह कबीर के चरणों में गिर पड़े और उनसे भवसागर से पार उतारने की प्रार्थना की।

धरमदास ने विनम्र भाव से कहा:

गुरु पैथा लागो, नाम लखा दीजो रे।

जन्म-जन्म का मोहथा मनुवा, मायामय मार जगा दीजो रे।



संत धरमदास

नैन नहीं मुझको, ज्ञान की दीप जला दीजो रे।

मथुरा में कबीर ने उहें आत्मज्ञान का मंत्र दिया और उनके मन को माया से मुक्त कर जागृत किया। इस मुलाकात ने धरमदास के जीवन को एक नई दिशा दी। वह कबीर के प्रति पूरी तरह समर्पित हो गए।

काशी में पूर्ण समर्पण

कुछ समय बाद धरमदास काशी पहुँचे, जहाँ वह संत कबीर के और करीब आए। काशी में उनके निवास पर भक्तों और साधकों की भीड़ लगी रहती थी। दिन-रात पूजा-पाठ और सत्संग का दौर चलता रहता था। एक बार फिर कबीर ने उहें दर्शन दिए। इस बार का दर्शन उनके लिए बहुत गहरा और आध्यात्मिक था। धरमदास ने मन और वाणी से कबीर को पहले ही गुरु मान लिया था, लेकिन काशी में उनके हृदय ने कबीर को परम गुरु के रूप में स्वीकार किया।

कबीर ने उहें बताया, “इस संसार में हरि के समान कोई दूसरा राजा नहीं। तन, धन, परिवार, और सरो-संबंधी सब साथ छोड़ देते हैं, लेकिन हृदय में बसे राम कभी अलग नहीं होते। वही सच्चा धन है, वही प्रियतम है, और वही जीवन का आधार है।” इन शब्दों ने धरमदास के मन में वैराग्य की लहर पैदा कर दी। उन्होंने संसार की नश्वरता को गहराई से महसूस किया और कबीर के चरणों में पूर्ण समर्पण कर दिया।

संत कबीर ने उहें गले लगाया और धरमदास सत्यनाम के सच्चे साधक बन गए। उन्होंने अपनी सारी संपत्ति का त्याग कर दिया और काशी में ही रहने लगे। वह पूरी तरह से राम के रंग में रंग गए। उनकी आँखों में अब

संदेश को जन-जन तक पहुँचाने का कार्य पूरी निष्ठा से किया। वह हमेशा कबीर के दर्शन के लिए तरसते रहते थे और मानते थे कि कबीर की कृपा से ही वह इस भवसागर से पार हो सकते हैं।

रचनाएँ: धरमदास की वाणी

संत धरमदास ने अपनी भक्ति और अनुभवों को जनभाषा में व्यक्त किया। उनकी रचनाएँ धरमदास की वाणी नामक संग्रह में संकलित हैं। इन रचनाओं में उनकी भक्ति की गहराई, राम के प्रति प्रेम, और संसार की नश्वरता का बोध स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। उनकी वाणी सरल, मधुर, और भावपूर्ण है, जो हर भक्त के हृदय को छू लेती है।

उनकी रचनाएँ आम लोगों की भाषा में हैं, जिससे हर कोई उनके भक्ति रस को समझ सके। वह अपनी वाणी के माध्यम से यह संदेश देते थे कि सच्चा सुख केवल राम की भक्ति में है। उनकी रचनाओं में गुरु की महिमा, राम का प्रेम, और वैराग्य की भावना गहरे रूप में व्यक्त हुई है।

आध्यात्मिक योगदान और विवासत

संत धरमदास का जीवन उस समय की अस्थिर राजनैतिक परिस्थितियों में भी एक दीपक की तरह चमकता रहा। उस समय देश में सत्ता के लिए संघर्ष चल रहा था, लेकिन धरमदास ने संत कबीर के मार्गदर्शन में निर्णय और निराकार परमात्मा का चिंतन किया। उन्होंने जीवन की नश्वरता का रहस्य उजागर किया और सभी वर्गों के बीच आध्यात्मिक एकता का संदेश दिया।

उनका मानना था कि सच्ची भक्ति में कोई भेदभाव नहीं होता। वह हर वर्ग के लोगों को एकसाथ जोड़ने में विश्वास रखते थे। उनकी शिक्षाएँ राष्ट्रीय एकता और आध्यात्मिकता का आधार बनीं। संत धरमदास ने अपने जीवन के माध्यम से यह दिखाया कि सच्चा साधक वही है, जो अपने प्रियतम राम को हर पल अपने हृदय में बसाए रखते हैं।

संवत् 1600 (लगभग 1543ई.) के आसपास उन्होंने देह त्याग दी, लेकिन उनकी शिक्षाएँ और रचनाएँ आज भी भक्तों के लिए प्रेरणा का स्रोत हैं। वह सदा कबीर के दर्शन के लिए तरसते थे और उनकी वाणी में यह भावना बार-बार झलकती है।

संवत् 1600 (लगभग 1543ई.) के आसपास उन्होंने देह त्याग दी, लेकिन उनकी शिक्षाएँ और रचनाएँ आज भी भक्तों के लिए प्रेरणा का स्रोत हैं। वह सदा कबीर के दर्शन के लिए तरसते थे और उनकी वाणी में यह भावना बार-बार झलकती है।

रामरस के सच्चे साधक

संत धरमदास का जीवन एक ऐसी मिसाल है, जो हमें सिखाता है कि सच्ची भक्ति अहंकार का त्याग करने और राम के प्रेम में डूबने में है। वह एक व्यापारी से संत बने और अपने जीवन को पूरी तरह राम और गुरु के चरणों में समर्पित कर दिया। उनकी भक्ति में भित्ति थी, उनकी वाणी में सरलता थी, और उनके हृदय में केवल राम का प्रेम था।

संत कबीर की वाणी का संरक्षण

संत धरमदास ने न केवल कबीर के उपदेशों को अपने जीवन में उतारा, बल्कि उनकी वाणी को सहेजने का भी महत्वपूर्ण कार्य किया। उन्होंने कबीर की छत्तीसगढ़ी साखियों का संग्रह किया और उसे बीजक के रूप में संकलित किया। यह ग्रंथ संत कबीर की शिक्षाओं का एक अनमोल खजाना है, जिसे धरमदास ने बड़े प्रेम और अद्वा से संरक्षित किया।

उनका संदेश साफ था: राम का नाम ही सच्चा धन है, और गुरु की कृपा के बिना यह धन नहीं मिलता। संत धरमदास ने न केवल अपने जीवन को रामरस में डूबाया, बल्कि दूसरों को भी इस रस का आनंद लेने की प्रेरणा दी। उनकी वाणी और बीजक जैसे ग्रंथ आज भी संत कबीर की शिक्षाओं को जीवित रखते हैं।

संत धरमदास का जीवन हमें यह सिखाता है कि चाहे कितनी भी विपत्तियाँ आँँ, राम का नाम और गुरु की कृपा हमें हर संकट से पार ले जा सकती है। वह सच्चे अर्थों

बिहार वोटर लिस्ट विवाद

क्या है सच, क्या है अफवाह?

बि

हार में चुनाव आयोग की विशेष गहन मतदाता सूची पुनरीक्षण (SIR) प्रक्रिया ने एक बड़ा विवाद खड़ा कर दिया है। इस प्रक्रिया में 41 लाख से ज्यादा वोटरों के नाम मतदाता सूची से हटने का खतरा है। चुनाव आयोग का कहना है कि नेपाल, बांग्लादेश और म्यांमार जैसे देशों के लोगों के नाम गलती से वोटर लिस्ट में शामिल हो गए हैं। लेकिन विपक्षी पार्टियों ने इसे लोकतंत्र के खिलाफ साजिश करार दिया है। वे इसे राष्ट्रीय नागरिक रजिस्टर (NRC) को चुपके से लागू करने की कोशिश बता रहे हैं।

SIR क्या है और क्यों हो रहा है?

चुनाव आयोग ने 24 जून 2025 को बिहार में विशेष गहन मतदाता सूची पुनरीक्षण शुरू किया। इसका मकसद वोटर लिस्ट को अपडेट करना और गलत नामों को हटाना है। आयोग का कहना है कि 2003 के बाद यह पहला बड़ा रिवीजन है। इस प्रक्रिया में बूथ लेवल ऑफिसर (BLO) घर-घर जाकर वोटरों की जानकारी चेक कर रहे हैं।

आयोग के मुताबिक, इस रिवीजन की जरूरत कई कारणों से पड़ी:

पुरानी लिस्ट में गलतियां: कई लोग जो मर चुके हैं (12.5 लाख), बिहार से बाहर चले गए हैं (17.5 लाख), या दो बार रजिस्टर हैं (5.5 लाख), उनके नाम अभी भी लिस्ट में हैं।

विदेशी नागरिकों के नाम: नेपाल, बांग्लादेश और म्यांमार के कुछ लोगों के नाम वोटर लिस्ट में मिले हैं, जिन्हें हटाया जाएगा।

चुनाव की तैयारी: बिहार में 2025 के अंत में विधानसभा चुनाव होने हैं। साफ-सुधरी वोटर लिस्ट से निष्पक्ष चुनाव करना आसान होगा।

लेकिन विपक्ष का कहना है कि यह प्रक्रिया जल्दबाजी में शुरू की गई है। उनका आरोप है कि यह रिवीजन सत्ताधारी गठबंधन (NDA) को फायदा पहुंचाने के लिए हो रहा है।

41 लाख वोटरों का क्या होगा?

चुनाव आयोग के ताजा आंकड़ों के मुताबिक, 7.89 करोड़ वोटरों में से 41 लाख लोग अपनी जानकारी जमा नहीं कर पाए हैं। इनमें से:

14.1 लाख लोग मर चुके हैं।

19.7 लाख लोग बिहार से बाहर चले गए हैं।

7.5 लाख लोग कई जगह रजिस्टर हैं।

11,000 लोग द्वेष नहीं हो पाए।

25 जुलाई तक फॉर्म जमा करने की आखिरी तारीख थी। जो लोग फॉर्म नहीं जमा कर पाए, उनके नाम ड्राफ्ट लिस्ट में नहीं होंगे। ड्राफ्ट लिस्ट 1 अगस्त



को आएंगी और फाइनल लिस्ट 30 सितंबर को। इस बीच, लोग अपनी शिकायतें दर्ज कर सकते हैं।

विपक्षी नेता तेजस्वी यादव ने कहा है कि बिहार में 4 करोड़ प्रवासी मजदूर हैं। उनके लिए दस्तावेज जमा करना मुश्किल है। अगर 1% वोटर भी हर सीट से हटा गए, तो यह प्रति सीट 3,200 वोटरों का नुकसान होगा। इससे चुनाव का रिजल्ट बदल सकता है।

विपक्ष का गुरुस्सा और विरोध की योजना

विपक्षी दलों ने इस रिवीजन को लोकतंत्र के लिए खतरा बताया है। उनका कहना है कि यह प्रक्रिया गरीब, दलित, मुस्लिम और पिछड़े वर्गों को वोटर लिस्ट में रखकर अपना “वोट बैंक” बचाने की कोशिश कर रहा है। बीजेपी प्रवक्ता नीरज कुमार ने तेजस्वी यादव के बयान को “लोकतंत्र पर थूकना” बताया।

NRC का डर: तृणमूल कांग्रेस की ममता बनर्जी और AIMIM के असदुद्दीन ओवैसी ने इसे “NRC को बैकडोर से लाने” की कोशिश बताया।

दस्तावेजों की सख्ती: विपक्ष का कहना है कि आधार, राशन कार्ड और वोटर आईडी की जैसे आम दस्तावेजों को मान्य नहीं किया जा रहा। इससे गरीब और कम पढ़-लिखे लोगों को दिक्कत हो रही है।

चुनाव से पहले टाइमिंग: सुप्रीम कोर्ट ने भी इस रिवीजन की टाइमिंग पर सवाल उठाया। कोर्ट ने कहा कि इतने बड़े पैमाने पर रिवीजन को चुनाव से पहले पूरा करना मुश्किल है।

विपक्ष ने विरोध की योजना बनाई है। तेजस्वी यादव ने 35 विपक्षी दलों को पत्र लिखकर समर्थन मांगा। पप्पू यादव ने 9 जुलाई को बिहार बंद का ऐलान किया।

सुप्रीम कोर्ट और सरकार का रुख

सुप्रीम कोर्ट ने इस मामले में दखल दिया है। 10 जुलाई को कोर्ट ने कहा कि रिवीजन का मकसद ठीक है, लेकिन टाइमिंग गलत है। कोर्ट ने चुनाव आयोग से आधार, राशन कार्ड और वोटर आईडी को मान्य करने पर विचार करने को कहा। लेकिन आयोग ने जवाब दिया कि ये दस्तावेज नागरिकता का सबूत नहीं हैं।

सत्ताधारी बीजेपी और जेडी(यू) ने विपक्ष के आरोपों को खारिज किया। बीजेपी के अमित मालवीय ने कहा कि विपक्ष विदेशी नागरिकों को वोटर लिस्ट में रखकर अपना “वोट बैंक” बचाने की कोशिश कर रहा है।

चुनाव आयोग का कहना है कि यह प्रक्रिया पारदर्शी है।

सभी पार्टियों को ड्राफ्ट लिस्ट दी जाएगी और लोग अपनी शिकायतें दर्ज कर सकते हैं। आयोग ने यह भी कहा कि विदेशी नागरिकों की जांच 1 अगस्त से शुरू होगी।

व्याहृति असली डर और भविष्य?

इस विवाद के पीछे कई सवाल हैं। क्या यह रिवीजन वाकई साफ-सुधरे चुनाव के लिए है? या इसका मकसद किसी खास समुदाय को टारगेट करना है? बिहार के सीमांचल इलाके, जो नेपाल और बांग्लादेश की सीमा से सटे हैं, वहां की आबादी में बदलाव की बात लंबे समय से उठती रही है।

लोकतंत्र पर असर: अगर 41 लाख वोटरों के नाम हटाए गए, तो यह बिहार के 243 सीटों वाले विधानसभा चुनाव

को प्रभावित कर सकता है। हर सीट पर औसतन 17,000 वोटरों का नुकसान होगा।

सामाजिक तनाव: विपक्ष का कहना है कि यह प्रक्रिया गरीब और अल्पसंखक समुदायों को निशाना बना सकती है। इससे सामाजिक तनाव बढ़ सकता है।

राष्ट्रीय स्तर पर रिवीजन: आयोग ने संकेत दिया है कि बिहार के बाद पूरे देश में ऐसी प्रक्रिया हो सकती है। इससे और विवाद बढ़ सकता है।

इस प्रक्रिया का भविष्य सुप्रीम कोर्ट के फैसले पर टिका है। कोर्ट 28 जुलाई को इस मामले की सुनवाई पूरी करेगा। तब तक यह साफ हो जाएगा कि रिवीजन का दायरा क्या होगा।

निष्कर्ष

बिहार का वोटर लिस्ट विवाद एक जटिल मुद्दा है। एक तरफ, चुनाव आयोग का दावा है कि वह निष्पक्ष चुनाव के लिए वोटर लिस्ट को साफ करना चाहता है। दूसरी तरफ, विपक्ष इसे लोकतंत्र के खिलाफ साजिश बता रहा है। सच कहीं बीच में है। इस प्रक्रिया से लाखों लोग प्रभावित हो सकते हैं, खासकर गरीब और प्रवासी मजदूर। सुप्रीम कोर्ट का फैसला और आयोग की पारदर्शिता इस विवाद को सुलझाने में अहम होगी।

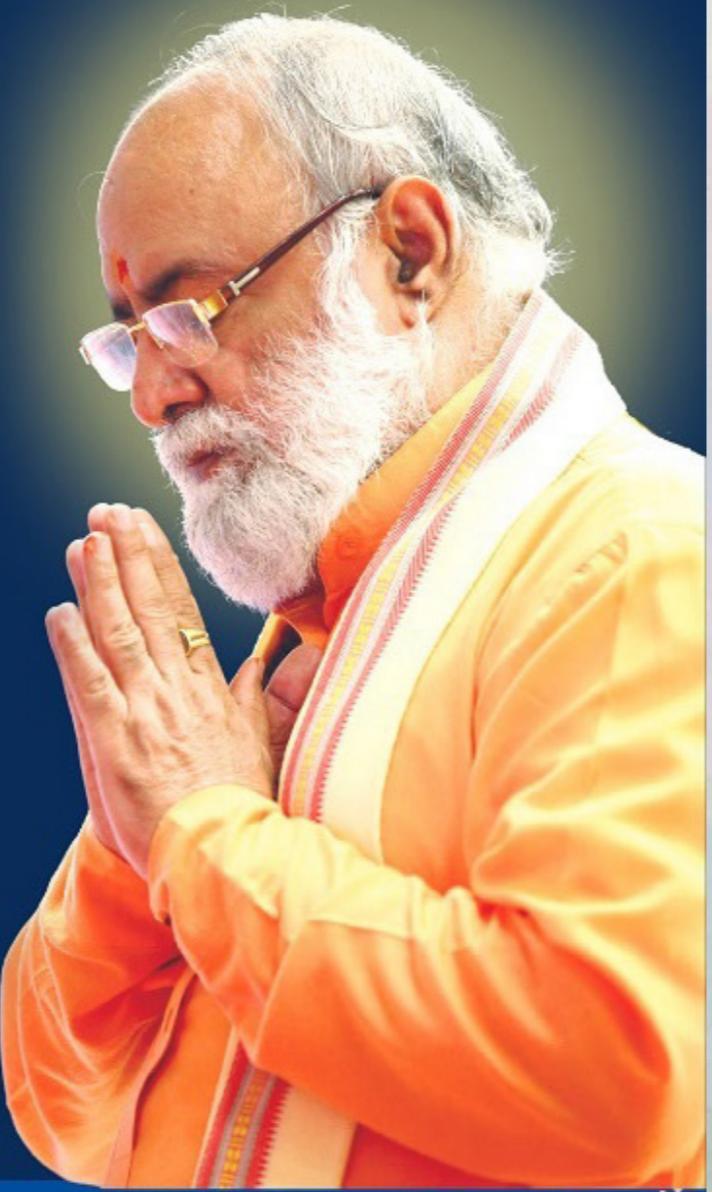
यह विवाद हमें सोचने पर मजबूर करता है कि क्या हमारा लोकतंत्र इतना मजबूत है कि हर नागरिक को उसका वोट डालने का हक मिले? या फिर ऐसी प्रक्रियाएं अनजाने में उन लोगों को बाहर कर रही हैं, जो पहले से ही हाशिए पर हैं? बिहार का यह मुद्दा सिफे एक राज्य की कहानी नहीं, बल्कि पूरे देश के लोकतंत्र का सवाल है।



मा सा के तीन बीज मंत्र हैं-ऐं, हीं, कर्तों। दुर्गा सप्तशती में वर्णन है कि विष्णु-आकाश (ह) तथा 'ईं' कार से युक्त, वीतहोत्र-अर्गिं (र)-सहित अर्धचन्द्र () से अलंकृत जो देवी का बीज है, वह सब मनोरथ पूर्ण करने वाला है। इस प्रकार इस एकाक्षर ब्रह्म (हीं) का ऐसे यति ध्यान करते हैं, जिनका चित्त शुद्ध है, जो निरपेक्षायानन्दपूर्ण और ज्ञान के सागर हैं। (यह देवी मंत्र देवी प्रणव माना जाता है। अंगकार के समान ही यह प्रणव भी व्यापक अर्थ से भरा हुआ है। वाणी (ऐं), माया (हीं), ब्रह्मसूक्तकाम (कर्तों) अथात इस मंत्र का अर्थ है-हे चित्तस्वरूपिणी महासरस्वती! हे सद्गौणिणी महालक्ष्मी! हे ब्रह्मविद्या पाने के लिए हम सब समय तुम्हारा ध्यान करते हैं। हे महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीस्वरूपिणी तुम्हें नमस्कार करूँ। औविद्यारूप रञ्जु की दृढ़ ग्रीष्म को खोलकर मुझे मुक्त करो।

'अर्धचन्द्र' क्यों कोई अनपढ़ भी देख ले तो उसका कल्पणा हो जाता है। क्योंकि वे निये सिद्ध किया है। हरिद्वार में बड़े-बड़े घोड़ी आए और उन्होंने कला कि यह महाव्रतमणियों द्वारा दिया जाता है। इसमें सारा संसार पैदा हुआ है। ऐं, हीं और कर्तों से माता सृजन, पालन और दुखों-कर्तों का संहार करती है। इन तीन मंत्रों का यति ध्यान करते हैं। फिर देव का अंत होने पर वह भावती महामाया के प्रसाद से उस नित्य परम पद को प्राप्त होता है जो देवताओं के लिए भी दुर्लभ है। यदि अपने शरीर का भला चाहते हैं तो बिना पाठ करे कहीं एक पाठ भी न जाओ अर्थात पाठ करके ही यात्रा करें।

पाठ द्वारा सब और से सुरक्षित मनुष्य जहां-जहां भी जाता है वहां-वहां उसे धन लाभ होता है तथा संग्राम कामनाओं की सिद्धि होती है। वह जिस वस्तु का चिंतन करता है उसको निश्चय ही प्राप्त कर लेता है। वह पृथ्वी पर तुलनारहित महान ऐश्वर्य का भागी होता है। वह व्यक्ति सुरक्षित व निर्भय हो जाता है। युद्ध में उसकी पराजय नहीं होती तथा तीनों लोकों में पूजनीय होता है। जो प्रतिदिन तीनों संन्ध्याओं के समय पाठ करता है उसे देवी कला प्राप्त होती है। इतना ही नहीं वह अपमृत से रहित, सौ करें। जो इन मंत्रों को तोड़ता नहीं अर्थात निष्क्रीलन नहीं करता तो वे से भी अधिक वर्षों तक जीवित रहता है।



मरणासन्न बच्चे को मिला नया जीवन

राजस्थान के भरतपुर जिले में रहने वाले श्री नेपाल सिंह का अनुभव प्रभु के पाठ की शक्ति का जीवन्त उदाहरण है। इनकी भासी ने जुड़वा बच्चों का जन्म दिया था। जन्म के एक महीने बाद ही जुड़वा बच्चों में से एक की मृत्यु हो गई। नन्हे बच्चे की मृत्यु से परिवार में शोक की लहर दौड़ गई। दूसरे बच्चे का वजन केवल 869 ग्राम रह गया था। डाक्टरों ने भी जवाब दे दिया कि हम बच्चे की गंभीर स्थिति को देखकर कुछ नहीं कह सकते। कुछ दिन इलाज के बाद बच्चे को जयपुर रेफर कर दिया गया। बच्चे के परिजनों ने वृदावन के मशहूर बालरोग विशेषज्ञ से भी इलाज करवाने का फैसला किया लेकिन डाक्टर ने साफ कह दिया कि यह बच्चा अब बच सकता इसलिए आप इसे घर ले जाएं।

तरह-तरह के इलाज से निराश होकर श्री नेपाल सिंह ने परम पूज्य गुरुदेव जी से पाठ ग्रहण किया और नियमित रूप से सुबह शाम दिव्य बीज मंत्रों का पाठ करना शुरू कर दिया। दिव्य बीज मंत्रों के पाठ के प्रभाव से अपने ही दिन बच्चे के मृंग पर लगाई गई आकर्षीजन मास्क हटा दी गई। डाक्टर भी आश्चर्यचकित थे कि बच्चा अब सहजता से सांस ले रहा है। प्रभु की कृपा बच्चा पूरी तरह ठीक हो गया और कुछ दिन के बाद अस्पताल से डिस्चार्ज होकर घर आ गया। पूरे परिवार में एक बार पुनः प्रसन्नता की लहर दौड़ गई। प्रभु की कृपा से आज बच्चा पूर्णतः स्वस्थ है।

भयानक एक्सीडेंट में बच्चे प्राण

कैथल, हरियाणा के श्री गुरुमीत सिंह जी ने बताया कि 3-4 मई 2025 को मोहड़ी में हुए समागम में मेरा बेटा अंकुश भी आया था। समागम समाप्त होने के बाद वह और उसका दोस्त रवि मोटर साइकिल के द्वारा अपने घर वही को बापस जा रहे थे तो उनका भयनक एक्सीडेंट हो गया। भी उनकी गाड़ी पहवा में पहले से ही सड़क पर एक्सीडेंट हुई कार मां और द्रुक टक्का गई। इस एक्सीडेंट के कारण मेरे लड़के को चोट लगी लेकिन उसका दोस्त रवि को खोरे भी नहीं आई। मेरे मैं बेटे अंकुश के चोरे पर 18 टांके एआई लेकिन फिर भी मां दोनों के पाठ और परम पूज्य सद्गुरुदेव जी के आशीर्वाद से दोनों बच गए। मेरा बेटा अब पूरी तरह स्वस्थ है। जैसी कृपा आप अपने मेरे बेटे पर की है वैसी कृपा आप सभी पर करें। गुरुदेव जी के चरणों में कोटि-कोटि नमन।

विवाह के 13 साल बाद बनी मां

भागलपुर, बिहार की श्रीमती प्रियंका ने बताया कि मेरे विवाह के 13 वर्ष हो गए थे लेकिन कोई की प्राप्ति नहीं हुई। मैंने कई डाक्टरों को दिखाया और इलाज भी करवाया लेकिन मैं कंसीव नहीं कर पाई। मेरे पति और मेरी रिपोर्ट बिल्कुल ठीक आई लेकिन फिर भी मां दोनों के पाठ से दोनों बच गए। हमने देवी-देवता मनाए, पूजा-पाठ करवाई और जहां भी जिसने कहा वहां गए लेकिन निराशा ही हाथ आई। अंततः मां दुर्गा के विशेष पाठ से चमत्कार ही गया कि मैंने कंसीव कर लिया। डाक्टर ने बताया कि मैं मां बनने वाली हूं। इस प्रकार मैं परम पूज्य सद्गुरुदेव जी के आशीर्वाद और मां दुर्गा के पाठ की जहां से मैं 42 साल की उम्र में मां बनी हूं। मैं चार साल से मिरेकल बंडर वाश का प्रयोग भी कर रही हूं। पूज्य गुरु जी वे गुरु मां जी के चरणों में प्रणाम।



बिना ऑपरेशन के लीवर का गंभीर रोग ठीक

ईश्वर की कृपा हो तो बड़े से बड़ा संकट सहजता से दूर हो जाता है। मुंबई, भयंदर में रहने वाली अमरजीत कौर के पेट में बहुत दर्द रहता था। उन्होंने पंजाब के डाक्टरों को जब अपने रोग के बारे में बताया तो उन्होंने सोनोग्रामी की सलाह दी। जब उन्होंने सोनोग्रामी करवाई तो पता चला कि उनके पेट में तीन अलग अलग फाइब्रोडॉन हैं और इनका इलाज आपरेशन से ही संभव है। उनके पास आपरेशन के लिए अधिक धन भी नहीं था।

श्रीमती अमरजीत कौर ने समागम में जाकर दिव्य बीज मंत्रों की कृपा ग्रहण की और श्रद्धा से उनका नियमित रूप से पाठ करने लगी। दिव्य पाठ के प्रभाव से वे उस समय हैरान रह गई जब सोनोग्रामी की अगली रिपोर्ट आई तब उन्हें पता चला कि रिपोर्ट पूरी तरह नार्मल है और उनके पेट में कोई फाइब्रोडॉन नहीं है। इस प्रकार शास्त्रोक्त पाठ से उनका वह कष्ट जड़ से समाप्त हो गया जिसका इलाज एकमात्र आपरेशन था। आज श्रीमती अमरजीत कौर पूरी तरह स्वस्थ हैं और उन्होंने सभी दवाइयां छोड़ दी हैं।

18 महीने की शादी, 12 करोड़ की मांग

सुप्रीम कोर्ट ने कहा – पढ़ी-लिखी हो, खुद कमाओ



@ रिंकू विश्वकर्मा

सुप्रीम कोर्ट ने तलाक से जुड़े एक मामले में बड़ा बयान देते हुए कहा कि यदि कोई महिला पढ़ी-लिखी और काविल है, तो उसे भरण-पोषण के लिए करोड़ों रुपये की मांग करने की बजाय खुद काम कर अपनी आजीविका करानी चाहिए। कोर्ट ने यह टिप्पणी उस समय की जब मुंबई की एक महिला ने अपने पति से तलाक के बाद 12 करोड़ रुपये, एक महीनी BMW कार और मुंबई में एक फ्लैट की मांग की थी इस पूरे मामले में खास बात यह रही कि महिला की शादी केवल 18 महीने चली और इसके बाद विवाद की स्थिति में तलाक की नौबत आ गई। महिला ने दावा किया कि उसका पति बहुत अमीर है, सिटी बैंक में मैनेजर के पद पर है और उसके दो अन्य बिजनेस भी हैं। महिला ने कहा कि उसका एक बच्चा पैदा करने का सपना अधूरा रह गया, इसलिए वह भरण-पोषण की हक्कदार है।

इस पर सुप्रीम कोर्ट ने सख्त टिप्पणी करते हुए कहा कि “आपकी शादी सिर्फ 18 महीने चली और आप हर महीने एक करोड़ रुपये मांग रही हैं। आप इतनी पढ़ी-लिखी हैं, फिर नौकरी क्यों नहीं करतीं? एक उच्च शिक्षित महिला खाली नहीं बैठ सकती। आपको अपने लिए भीख मांगने की बजाय काम कर खुद कमाकर खाना चाहिए।”

सुप्रीम कोर्ट ने दिया समझौते का सुझाव

चीफ जस्टिस ऑफ इंडिया बी आर गवई की अध्यक्षता वाली बैंच ने महिला से कहा कि वह मुंबई में एक फ्लैट से संतुष्ट हो जाए या फिर चार करोड़ रुपये

लेकर समझौता कर ले और आगे की जिंदगी के लिए एक अच्छी नौकरी ढूँढ ले। अदालत ने इस सुझाव के बाद अपना फैसला सुरक्षित रख लिया और मामला रद्द करने का भी आदेश दे दिया। कोर्ट ने साफ कहा कि एक शिक्षित महिला को अपनी आर्थिक स्वतंत्रता के लिए खुद प्रयास करना चाहिए, बजाय इसके कि वह शादी के इतने कम समय के रिश्ते के आधार पर पति से करोड़ों रुपये मांगे। अदालत ने कहा कि हम एफआईआर को रद्द कर देंगे लेकिन समझ लीजिए कि आप अपने समूर्ह की संपत्ति पर कोई दावा नहीं कर सकतीं।

महिला ने कोर्ट में क्या कहा

महिला ने अदालत में कहा कि उसका पति बहुत अमीर है और उसे उसके करियर में आगे बढ़ने का मौका नहीं दिया। महिला ने यह भी आरोप लगाया कि पति ने उसके खिलाफ इंग्रजी आरोप लगाए कि वह मानसिक बीमारी सिजोफ्रेनिया से ग्रसित है। महिला ने कोर्ट में सवाल किया, “क्या मैं सिजोफ्रेनिया की मरीज दिखती हूँ, माय लॉर्ड?” महिला ने बताया कि उसके खिलाफ एफआईआर दर्ज है, जिसके कारण उसे कहीं नौकरी नहीं मिल रही। साथ ही, उसने यह आरोप भी लगाया कि उसके पति ने उसके बैंकोल को भी उसके खिलाफ कर दिया है।

पति की ओर से क्या कहा गया

महिला के पति की ओर से पेश हुई सीनियर एडवोकेट माधवी दीवान ने कहा कि महिला हर चीज की मांग नहीं कर सकती, पति को भी कमाना पड़ता है। पति की आय का विवरण देते हुए उन्होंने बताया कि साल 2015-16

में पति की सालाना आय 2.5 करोड़ रुपये थी, जिसमें एक करोड़ रुपये का बोनस भी शामिल था। महिला द्वारा BMW कार की मांग पर बैंकोल ने कहा कि वह कार करीब 10 साल पुरानी थी और कबाड़ में जा चुकी है। साथ ही, उन्होंने यह भी बताया कि महिला के पास पहले से ही मुंबई में दो कार पार्किंग वाला एक फ्लैट है, जिसे वह आय का स्रोत बना सकती है।

तलाक के बाद पति की तरकी पर हक्क नहीं

सुप्रीम कोर्ट ने दिसंबर 2024 में एक अन्य तलाक से जुड़े मामले में यह स्पष्ट कर दिया था कि तलाक के बाद अगर पति की आर्थिक स्थिति सुधरती है, तो पत्नी उसके आधार पर भरण-पोषण की अतिरिक्त राशि की मांग नहीं कर सकती। जस्टिस बी वी नागरत्ना और जस्टिस पंकज मिथल की बैंच ने कहा था कि यदि पति तलाक के बाद अपनी मेहनत और काविलियत से आगे बढ़ता है और उसकी आर्थिक स्थिति बेहतर होती है, तो पत्नी की मांग उस पर निजी प्रगति का बोझ डालने जैसा होगा। अदालत ने स्पष्ट किया था कि भरण-पोषण का अधिकार पति की वर्तमान वित्तीय स्थिति को देखते हुए तथ यह किया जाता है, लेकिन तलाक के बाद पति की प्रगति पर पत्नी का हक नहीं हो सकता।

शिक्षित महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाना चाहिए

सुप्रीम कोर्ट का यह फैसला उन सभी मामलों के लिए एक मिसाल है, जहां शिक्षित महिलाएं शादी टूटने के बाद केवल भरण-पोषण पर निर्भर होकर जीवन गुजारने की

कोशिश करती हैं। अदालत ने इस निर्णय के माध्यम से यह साफ संदेश दिया है कि शिक्षित महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाना चाहिए और खुद की काविलियत पर भरोसा करना चाहिए। कोर्ट ने कहा कि शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति को आत्मनिर्भर बनाना होता है, न कि उसे किसी पर आर्थिक रूप से निर्भर रखने का बहाना देना। यह मामला महिलाओं के अधिकार, आत्मनिर्भरता और भरण-पोषण जैसे मुद्दों को लेकर समाज में महत्वपूर्ण चर्चा का विषय है। अदालत ने यह स्पष्ट कर दिया है कि यदि महिला योग्य और शिक्षित है, तो उसे अपनी शिक्षा और क्षमता का इस्तेमाल कर आत्मनिर्भर होना चाहिए। केवल इस आधार पर कि पति की आय अधिक है, महिला को असीमित भरण-पोषण की मांग करने की अनुमति नहीं दी जा सकती।

इस फैसले से यह भी स्पष्ट होता है कि अदालतें महिलाओं के अधिकारों का सम्मान करते हुए उन्हें आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में कदम उठा रही हैं। यह फैसला यह दिखाता है कि भरण-पोषण का अधिकार उन महिलाओं के लिए है, जो सच में इसके बिना जीवनयापन करने में असमर्थ हैं, न कि उन महिलाओं के लिए जो खुद सक्षम होते हुए भी दूसरों पर निर्भर रहना चाहती है। सुप्रीम कोर्ट का यह फैसला उन महिलाओं के लिए सीख है, जो उच्च शिक्षा प्राप्त होने के बावजूद आत्मनिर्भर बनने के बजाय दूसरों पर निर्भर रहना चाहती हैं। यह मामला केवल भरण-पोषण का नहीं, बल्कि आत्मनिर्भरता और आत्मसम्मान का भी है। अदालत ने इस मामले में स्पष्ट कर दिया है कि महिला के पास काम करने की क्षमता और शिक्षा है, तो उसे खुद कमाकर जीने की कोशिश करनी चाहिए।

ऑनलाइन सट्टेबाजी मामले में गूगल और मेटा पर ED की नजर: डिजिटल दुनिया में सवाल

भारत की प्रवर्तन निदेशालय (ED) ने 21 जुलाई 2025 को गूगल और मेटा के अधिकारियों को समन भेजकर एक बड़ा कदम उठाया है। इन टेक कंपनियों पर आरोप है कि उन्होंने अवैध ऑनलाइन सट्टेबाजी ऐप्स को अपने प्लेटफॉर्म्स पर प्रचारित किया, जो मनी लॉन्ड्रिंग और अन्य वित्तीय अपराधों की जांच के दायरे में हैं। यह मामला न केवल टेक कंपनियों की जिम्मेदारी पर सवाल उठाता है, बल्कि भारत में डिजिटल प्लेटफॉर्म्स के नियमन और ऑनलाइन सट्टेबाजी की बढ़ती दुनिया पर भी गहरी नजर डालने की जरूरत को दर्शाता है।

ED की कार्रवाई: सट्टेबाजी ऐप्स पर शिकंजा

प्रवर्तन निदेशालय (ED) ने गूगल और मेटा को 21 जुलाई को दिल्ली में अपने मुख्यालय में बुलाया है ताकि उनके बयान दर्ज किए जा सकें। यह कार्रवाई मनी लॉन्ड्रिंग रोकथाम अधिनियम (PMLA) के तहत हो रही है। ED का कहना है कि गूगल और मेटा ने अपने प्लेटफॉर्म्स, जैसे सर्च इंजन, सोशल मीडिया, और ऐप स्टोर्स, पर अवैध सट्टेबाजी ऐप्स के विज्ञापन चलाए, जिससे इन ऐप्स की पहुंच लाखों यूजर्स तक बढ़ी।

ED की जांच का आधार मध्य प्रदेश के इंदौर में 9 जनवरी 2025 को दर्ज एक FIR है, जिसमें भारतीय न्याय संहिता की धारा 319(2) और 318(4) (पहले IPC की धारा 419 और 420) के तहत धोखाधड़ी और आपराधिक विश्वासघात के आरोप लगाए गए थे। जांच में कई सट्टेबाजी प्लेटफॉर्म्स, जैसे VMoney, VM Trading, Standard Trades Ltd, iBull Capital Ltd, LotusBook, 11Starss, और GameBetLeague, सामने आए हैं। ED का दावा है कि ये प्लेटफॉर्म्स “स्किल-बेस्ड गेमिंग” के नाम पर अवैध सट्टेबाजी को बढ़ावा दे रहे हैं और करोड़ों रुपये की अवैध कमाई को हवाला जैसे रास्तों से छिपा रहे हैं।

हाल ही में मुंबई में ED ने चार जगहों पर छापेमारी की, जहां 3.3 करोड़ रुपये की नकदी, लाग्जरी घड़ियां, गहने, विदेशी मुद्रा, और लाग्जरी गाड़ियां जब्त की गईं। इस दौरान कैश काउंटिंग मशीनें भी मिलीं, जो इन प्लेटफॉर्म्स की विश्वाल अवैध कमाई का संकेत देती हैं।

गूगल और मेटा की भूमिका: विज्ञापनों का खेल

ED का मुख्य आरोप है कि गूगल और मेटा ने अपने विज्ञापन और कंटेनर मॉडरेशन सिस्टम्स के जरिए अवैध सट्टेबाजी ऐप्स को प्रमोट करने में मदद की। गूगल के सर्च रिलेट्स, यूट्यूब, और प्ले स्टोर, साथ ही मेटा के फेसबुक, इंस्टाग्राम, और व्हाट्सएप जैसे प्लेटफॉर्म्स पर इन ऐप्स के विज्ञापन प्रमुखता से दिखाए गए। ED यह समझना चाहती है कि इन टेक कंपनियों ने इन विज्ञापनों को मंजूरी देने से पहले क्या कोई जांच-पड़ताल की थी, और क्या उन्हें इन ऐप्स की अवैध प्रकृति के बारे में पता था।

सूत्रों के मुताबिक, इन प्लेटफॉर्म्स ने न केवल विज्ञापनों के जरिए इन ऐप्स को बढ़ावा दिया, बल्कि उनकी



पहुंच को और विस्तार देने के लिए टारगेटेड मार्केटिंग का भी इस्तेमाल किया। उदाहरण के लिए, गूगल के प्ले स्टोर पर इन ऐप्स को डाउनलोड के लिए उपलब्ध कराया गया, और मेटा के सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर इनके प्रचार के लिए सेलेब्रिटीज और इन्फ्लुएंसर्स की मदद ली गई।

हालांकि, गूगल और मेटा ने अभी तक इस मामले पर कोई अधिकारिक बयान नहीं दिया है। दोनों कंपनियां पहले भी कह चुकी हैं कि वे स्थानीय नियमों का पालन करती हैं और सरकारी एजेंसियों के साथ सहयोग करने को तैयार हैं। लेकिन यह सवाल बना हुआ है कि क्या इन टेक दिग्जिटों ने अपनी जिम्मेदारी को नजरअंदाज किया, जिससे अवैध गतिविधियां बढ़ीं।

जांच शुरू की है, जो इन जटिल लेन-देन को उजागर कर सकते हैं।

इन प्लेटफॉर्म्स का दावा है कि वे “स्किल-बेस्ड गेमिंग” ऑफर करते हैं, लेकिन ED का कहना है कि ये असल में अवैध जुआ हैं। इन ऐप्स ने 2025 के पहले तीन महीनों में 1.6 बिलियन से ज्यादा विजिट्स दर्ज किए, और अनुमान है कि भारत में ऑनलाइन सट्टेबाजी का बाजार करीब 100 मिलियन डॉलर का हो सकता है। करीब 22 करोड़ भारतीय यूजर्स इन ऐप्स से जुड़े हैं, जिनमें 11 करोड़ नियमित यूजर्स हैं।

सेलेब्रिटीज और इन्फ्लुएंसर्स का रोल: पैसा या अनजाने में गलती?

ED की जांच में कई बॉलीवुड और साउथ इंडियन फिल्म इंडस्ट्री के सेलेब्रिटीज और सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर्स भी शामिल हैं। प्रकाश राज, राणा दग्गुबाटी, और विजय देवरकोंडा जैसे नामों का जिक्र Enforcement Case Information Report (ECIR) में है। इन पर आरोप है कि इन्होंने मोटी रकम लेकर इन अवैध ऐप्स को प्रमोट किया, जिससे इनकी पहुंच और विश्वसनीयता बढ़ी।

उदाहरण के लिए, Fairplay IPL बेटिंग ऐप ने IPL मैचों को अवैध रूप से स्ट्रीम किया और अनधिकृत सट्टेबाजी को बढ़ावा दिया, जिससे आधिकारिक ब्रॉडकास्टर Viacom18 को भारी नुकसान हुआ। कई सेलेब्रिटीज ने इस ऐप को प्रमोट किया, जिससे यह लाखों यूजर्स तक पहुंचा। ED का कहना है कि इन सेलेब्रिटीज को जल्द ही समन भेजा जा सकता है।

यहां सवाल यह है कि क्या ये सेलेब्रिटीज जानबूझकर इन अवैध गतिविधियों में शामिल थे, या वे अनजाने में इनके जाल में फंस गए? कई इन्फ्लुएंसर्स का कहना हो सकता है कि उन्हें इन ऐप्स की असलियत नहीं पता थी, लेकिन ED यह जांच कर रही है कि क्या इनके प्रचार ने यूजर्स को ठगने में मदद की।

डिजिटल नियमन और भविष्य: क्या बदलेगा?

यह मामला भारत में डिजिटल प्लेटफॉर्म्स के नियमन पर बड़े सवाल खड़े करता है। सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारतीय विज्ञापन मानक परिषद, और केंद्रीय उपभोक्ता संरक्षण प्राधिकरण ने भी हाल के महीनों में ऑनलाइन सट्टेबाजी के प्रचार पर चिंता जताई है। 2022 से फरवरी 2025 तक, सरकार ने 1,410 ऑनलाइन सट्टेबाजी और जुआ वेबसाइट्स/ऐप्स को ब्लॉक करने के निर्देश जारी किए हैं, लेकिन कई प्लेटफॉर्म्स का नाम बदलकर फिर से उभर आते हैं।

गूगल और मेटा जैसी टेक कंपनियों पर अब दबाव है कि वे अपने विज्ञापन नीतियों और कंटेनर मॉडरेशन को और सख्त करें। ED यह भी जांच रही है कि इन कंपनियों ने अवैध ऐप्स से मिलने वाले फँड्स की जांच कैसे की, और क्या उनके सिस्टम्स में कोई खामियां थीं जिनका पायादा इन ऐप्स ने उठाया।

इस मामले का असर न केवल टेक कंपनियों पर, बल्कि पूरे डिजिटल विज्ञापन और गेमिंग इंडस्ट्री पर पड़ सकता है। भारत में ऑनलाइन सट्टेबाजी का बढ़ता बाजार और इसके साथ जुड़े वित्तीय अपराध एक गंभीर चुनौती है। सरकार और नियामक संस्थाओं को अब यह सुनिश्चित करना होगा कि डिजिटल प्लेटफॉर्म्स ऐप्सी गतिविधियों को रोकने के लिए ठोस कदम उठाएं। साथ ही, यूजर्स को भी जागरूक होने की जरूरत है ताकि वे ऐप्से ऐप्स के जाल में न फँसें।

एक जटिल चुनौती

ED की यह कार्रवाई एक बड़े और जटिल मुद्दे की ओर इशारा करती है—डिजिटल दुनिया में अवैध गतिविधियों को रोकना। गूगल और मेटा जैसे टेक दिग्जिटों की भूमिका, सेलेब्रिटीज का प्रभाव, और सट्टेबाजी ऐप्स की जटिलता इस मामले को और पेचीदा बनाती है। यह जांच न केवल वित्तीय अपराधों को उजागर कर रही है, बल्कि डिजिटल प्लेटफॉर्म्स की जिम्मेदारी और नियमन की जरूरत को भी सामने ला रही है।

आने वाले समय में यह देखना दिलचस्प होगा कि गूगल और मेटा इस समन का जवाब कैसे देते हैं, और क्या ED की जांच से इन अवैध ऐप्स का जाल पूरी तरह से खत्म हो पाएगा।

साथ ही, यह मामला हमें यह सोचने पर मजबूर करता है कि डिजिटल दुनिया में नैतिकता और जवाबदेही को कैसे सुनिश्चित किया जाए। क्या आप मानते हैं कि टेक कंपनियों को और सख्त नियमों का पालन करना चाहिए, या यह यूजर्स की जिम्मेदारी है कि वे ऐप्सी गतिविधियों से बचें? यह एक ऐसा सवाल है, जिसका जवाब समय और समाज को मिलकर ढूँढ़ा होगा।

कांवड़ यात्रा मार्ग पर दुकानों में क्यूआर कोड अनिवार्य सुप्रीम कोर्ट ने सरकार के फैसले को सही ठहराया

@ आनंद मीणा

सा

बन के महीने में हर साल लाखों शिवभक्त कांवड़ यात्रा पर निकलते हैं। ये श्रद्धालु सैकड़ों किलोमीटर पैदल चलते हैं और जगह-जगह रुककर भोजन, जलपान और आराम करते हैं। इस दौरान यात्रा मार्ग पर लगे ढाबे, होटल और दुकानों की जिम्मेदारी होती है कि यात्रियों को साफ-सुथरा और सुरक्षित भोजन मिले। इसी को ध्यान में रखते हुए उत्तर प्रदेश और उत्तराखण्ड सरकार ने यात्रा मार्ग पर सभी ढाबों, भोजनालयों और दुकानों को क्यूआर कोड लगाने का आदेश दिया था। इस आदेश के खिलाफ कुछ याचिकाएं सुप्रीम कोर्ट पहुंचीं, लेकिन अदालत ने मंगलवार को सुनवाई करते हुए सरकार के फैसले को बरकरार रखा है। यह मामला सिर्फ कांवड़ यात्रा या ढाबों तक सीमित नहीं था, बल्कि निजता के अधिकार, धार्मिक पहचान और भेदभाव जैसे गंभीर सवाल भी इसमें जुड़े हुए थे। आइए समझते हैं कि यह पूरा विवाद क्या था, सरकार का पक्ष क्या था और याचिकाकर्ताओं ने क्यों इसे निजता का उल्लंघन माना।

क्या आदेश सरकार का क्यूआर कोड लगाने का आदेश

उत्तर प्रदेश और उत्तराखण्ड सरकारों ने सावन के महीने में कांवड़ यात्रा के दौरान यात्रियों की सुविधा और सुरक्षा के लिए यात्रा मार्ग पर बने ढाबों, होटल और दुकानों को क्यूआर कोड लगाने का आदेश दिया था। सरकार का कहना था कि कांवड़ यात्रा में लाखों लोग शामिल होते हैं, ऐसे में सभी दुकानों की निगरानी और स्वच्छता सुनिश्चित करना जरूरी है। सरकार का तर्क था कि जब हर दुकान या ढाबे पर क्यूआर कोड होगा, तो उसे स्कैन करके कोई भी यह देख सकेगा कि उस दुकान के मालिक का नाम क्या है, लाइसेंस नंबर क्या है, पंजीकरण प्रमाणपत्र वैध है या नहीं और दुकान के बारे में दूसरी जरूरी जानकारी क्या है। इसके पीछे मकसद था कि कोई भी तीर्थयात्री या प्रशासन तुरंत यह पता कर सके कि कहाँ कोई दुकान अवैध तरीके से तो नहीं चल रही या वहां पर गंदी तो नहीं है। सरकार ने कहा कि यह कदम यात्रियों की सुरक्षा और स्वच्छता को लेकर उठाया गया है, ताकि कोई मिलावटी या असुरक्षित खाना न परोसा जाए।

याचिकाकर्ताओं को क्यों थी आपत्ति?

सरकार के इस फैसले के खिलाफ दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रोफेसर अपूर्वानंद, सामाजिक कार्यकर्ता आकार पटेल, टीएमसी सांसद महुआ मोइत्रा और एक एनजीओ 'एसोसिएशन फॉर प्रोटेक्शन ऑफ सिविल राइट्स' सुप्रीम कोर्ट पहुंचे। याचिकाकर्ताओं ने तर्क दिया कि यह आदेश सीधे तौर पर दुकानदारों की निजता का उल्लंघन करता है। उनका कहना था कि क्यूआर कोड स्कैन कर के जब किसी दुकान मालिक का नाम और धर्म पता चल जाएगा तो यह धार्मिक पहचान के अधार पर भेदभाव को बढ़ावा दे सकता है। याचिका में कहा गया कि यह सुप्रीम कोर्ट के ही एक पुराने आदेश की अवमानना है, जिसमें अदालत ने साफ किया था कि



किसी भी दुकानदार को अपनी पहचान जबरन उजागर करने के लिए बाध्य नहीं किया जा सकता।

याचिकाकर्ताओं ने कहा कि पहले ही सुप्रीम कोर्ट ने पिछले साल इसी मुद्दे पर दखल देते हुए आदेश दिया था कि दुकानदार सिर्फ यह बताएंगे कि वे क्या बेच रहे हैं, उन्हें अपनी जिजी जानकारी देने के लिए मजबूर नहीं किया जाएगा। उनका कहना था कि अब वही आदेश क्यूआर कोड के बहाने डिजिटल तरीके से लागू किया जा रहा है, जिससे धार्मिक पहचान सार्वजनिक होगी और कुछ समुदाय के लोगों को निशाना बनाया जा सकता है।

अदालत ने कोई राहत देने से साफ इनकार कर दिया

मंगलवार को सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई के दौरान याचिकाकर्ताओं ने अपनी दलीलें रखीं, लेकिन अदालत ने कोई राहत देने से साफ इनकार कर दिया। अदालत ने कहा कि इस समय कांवड़ यात्रा अपने अंतिम चरण में है और यह जल्द ही खत्म हो जाएगी, इसलिए फिलहाल अदालत इसमें कोई हस्तक्षेप नहीं करेगी। कोर्ट ने साफ कहा कि सभी होटल और ढाबा मालिकों को वैधानिक नियमों के तहत लाइसेंस और पंजीकरण प्रमाणपत्र प्रदर्शित करना ही होगा।

अदालत ने यह भी कहा कि फिलहाल वह इस आदेश के अलावा किसी अन्य विवादित मुद्दे पर विचार नहीं कर रही है। कहने का मतलब यह कि सुप्रीम कोर्ट ने साफ कर दिया कि सरकार का आदेश सही है और दुकानदारों को नियमों का पालन करना ही पड़ेगा।

पहले भी हो चुका है विवाद

यह कोई पहला मौका नहीं है जब कांवड़ यात्रा मार्ग पर दुकानदारों की पहचान को लेकर विवाद खड़ा हुआ है। पिछले साल भी उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड और मध्य प्रदेश सरकारों ने आदेश दिया था कि कांवड़ यात्रा मार्ग पर दुकान और ढाबा मालिकों को अपने और अपने कर्मचारियों के नाम सार्वजनिक करने होंगे। उस वक्त भी कई संगठनों ने सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटाया था। तब अदालत ने सरकार के आदेश पर रोक लगा दी थी। अदालत ने कहा था कि दुकानदार के बहल यह बताएंगे कि वे क्या बेच रहे हैं, उन्हें अपनी व्यक्तिगत पहचान बताने की कोई जरूरत नहीं है। याचिकाकर्ताओं का कहना था कि उसी आदेश को नजरअंदाज करते हुए अब सरकार क्यूआर कोड के जरिए वही काम कर रही है। हालांकि सुप्रीम कोर्ट ने इस बार सरकार की दलील को मजबूत माना और याचिका को खारिज कर दिया।

क्यों जरूरी था क्यूआर कोड का आदेश

कांवड़ यात्रा के दौरान रास्ते में हजारों दुकानें, ढाबे और खाने-पीने की जगहें बन जाती हैं। इनमें से कई अस्थायी होती हैं, जिनका कोई लाइसेंस या पंजीकरण नहीं होता। कई बार नकली दूध, मिलावटी शरबत या बासी खाना बेचने की शिकायतें भी आती रही हैं। सरकार का कहना था कि क्यूआर कोड से हर दुकान को वैधानिक रूप से पंजीकृत रखा जाएगा और प्रशासन को निगरानी में आसानी होगी। जब कोई तीर्थयात्री या अफसर क्यूआर कोड स्कैन करेगा तो तुरंत पता

चलेगा कि दुकान किसके नाम पर है, लाइसेंस वैध है या नहीं और क्या वहां सभी नियमों का पालन हो रहा है। सरकार ने इसे खाद्य सुरक्षा और यात्रियों की सेहत से जोड़ा। सरकार का कहना था कि यह किसी भी धार्मिक पहचान को उजागर करने के लिए नहीं, बल्कि जिम्मेदारी तय करने के लिए है ताकि अगर कोई घटना हो तो दुकान मालिक की पहचान सामने रहे। हालांकि याचिकाकर्ताओं का कहना था कि जब किसी दुकान मालिक का नाम और धर्म सार्वजनिक होगा तो धार्मिक आधार पर भेदभाव हो सकता है। उनका तर्क था कि कुछ कट्टरपंथी संगठन या व्यक्ति किसी धर्म विशेष के दुकानदार को निशाना बना सकते हैं। उन्होंने दलील दी कि यह सामाजिक सौहार्द के लिए खतरा बन सकता है। इस वजह से इसे निजता के अधिकार और समानता के अधिकार का उल्लंघन बताया गया।

फिलहाल कांवड़ यात्रा समाप्ति के करीब है, लेकिन इस आदेश ने भविष्य के लिए भी एक मिसाल बना दी है। सुप्रीम कोर्ट के फैसले से साफ है कि सरकार खाद्य सुरक्षा और स्वच्छता जैसे मुद्दों पर कड़ा रुख अपना रहा है। और यात्रा के दौरान लाखों लोगों की सुरक्षा में किसी तरह की ढील नहीं देना चाहती। साथ ही यह भी तय है कि अब कांवड़ यात्रा के अलावा बाकी धार्मिक मेलों और आयोजनों में भी सरकार इस मॉडल को लागू कर सकती है। हालांकि यह बहस फिर भी जारी रहेगी कि क्या इस तरह की जानकारी सार्वजनिक करना सही है या नहीं। निजता बनाम सार्वजनिक सुरक्षा की यह बहस अदालतों में आगे भी देखने को मिल सकती है।

हम अपना समय लिख नहीं पाएँगे

यह ठहरा हुआ निर्जन समय
जिसमें यक्षी और चिड़ियाँ तक चुप हैं,

जिसमें रोज़मरा की आवाजें नहीं सिर्फ़ गूँजें भर हैं,
जिसमें प्रार्थना, पुकार और विलाप सब मौन में बिला गए हैं,

जिसमें संग-साथ कहीं दुबका हुआ है,
जिसमें हर कुछ पर चुप्पी समय की तरह पसर गई है,

ऐसे समय को हम कैसे लिख पाएँगे?
यता नहीं यह रुमारा समय है

यहाँ हम किसी और समय में बलात् आ गए हैं
इतना सपाट है यह समय

कि इसमें कोई सलवटे, परते, दरारें, नज़र नहीं आती
और इससे भागने की कोई पगड़ंडी तक नहीं सूझती।

हम अपना समय लिख नहीं पाएँगे।
यह समय धीरे चल रहा है

लगता सब घाड़ियों ने विलम्बित होना ठान लिया है;
बैमौसम रुवा ठंडी है;

यों वसंत है और फूल खिलायिला रहे हैं
मानो हमारे कुसमय पर हँस रहे हैं

और गिलहरियाँ तेज़ी से भागते हुए
मुँह घिड़ाती पेड़ों या खंभों पर चढ़ रही हैं;

अयानक कबूतर कुछ कम हो गए हैं जैसे
दिलाड़ी मज़दूरों की तरह अपने घर-गाँव वापस

जाने की दुखद यात्रा पर निकल गए हैं;
हमें इतना दिलासा भर है कि

अपने समय में भले न हों, हम अपने घर में हैं।
उम्मीद किसी कहरे के छूट गए हिस्से की तरह

किसी कोने में दुबकी यड़ी है
जो आज नहीं तो कल बुहरकर फेंक दी जाएगी।

हम अपना समय लिख नहीं पाएँगे।

प्रेम खो जाएगा

जैसे ग्रार्थना के शब्दों की शुद्धता में ईश्वर
जैसे खिली धूप में पिछली बादल-धीरी शाम का अवसाद

दैसे ही अपनी याहत से बिलमकर
प्रेम खो जाएगा

हम छीलते रहेंगे मेज़ पर चुपचाप बैठे नारंगियाँ और यादें
न सपने काफी होंगे न शब्द

अंत में नहीं बचेगी कोई मांगलिकता
प्रेम खो जाएगा

आकाश को अपनी बाँहों में भरने की कोशिश रह जाएगी
रह जाएगी पृथ्वी के शस्य की तरह समृद्ध होने की इच्छा

कविता जैसा निश्चल होने का उपक्रम
गली पहले ही खल हो जाएगी

दरवाजे बंद
धूप आने में असमर्थ

बीतने के भय के अलावा कोई नहीं होगा साथ
प्रेम खो जाएगा

जीर्णोद्धार के लिए नहीं मिलेंगे औजार
रफ़्र करने वाला धागा नहीं सूजेगा आँख को

दृश्यालेख से हरियाली, यक्षी
और बैंच पर हर दिन किसी देवता की तरह बैठा बूढ़ा

ओज़ल हो जाएँगे
प्रेम खो जाएगा...

अशोक वाजपेयी
समादृत कवि-आलोचक और संस्कृतिकर्मी। साहित्य अकादमी पुरस्कार
से सम्मानित।

20 साल तक सोता रहा राजकुमार इलाज पर खर्च हुए 328 करोड़ रुपये



@ मोहित प्रजापति

सऊदी अरब का राजपरिवार आज गहरे शोक में डूबा है। जिस बेटे के लिए पिता ने हर उम्मीद का दरवाजा खोला रखा, वह आखिरकार हमेशा के लिए दुनिया छोड़ गया। प्रिंस अल वलीद बिन खालिद बिन तलाल अल सऊद, जिसे लोग 'स्लीपिंग प्रिंस' कहते थे, शनिवार को 20 साल के लंबे कोमा के बाद चल बसे।

एक एक्सीडेंट ने बदल दी जिंदगी

अप्रैल 1990 में जन्मे प्रिंस अल वलीद एक सामान्य रॉयल लाइफ जी रहे थे। लेकिन साल 2005 में लंदन में मिलिट्री ट्रेनिंग के दौरान हुए भयानक सड़क हादसे ने उनकी जिंदगी को थाम दिया। इस एक्सीडेंट में उन्हें गंभीर ब्रेन इंजरी और इंटरनल ब्लीडिंग हुई। इस चोट ने उनके पूरे शरीर को सुन्न कर दिया और वह कोमा में चले गए। उस दिन के बाद उनके घर और परिवार में उम्मीद और संघर्ष की एक लंबी लड़ाई शुरू हुई, जो पूरे 20 साल तक चली।

परिवार ने उम्मीद का दामन नहीं छोड़ा

डॉक्टरों ने साफ कह दिया था कि अब वह मेडिकल रूप से अचेत है। परिवार से सलाह ली गई कि क्या लाइफ सपोर्ट हटाना है। लेकिन उनके पिता प्रिंस खालिद बिन तलाल ने हर सुझाव को टुकरा दिया। उनका एक ही जवाब था, "जिंदगी अल्लाह की देन है, वही इसे लेने का हक रखता है।" इस भरोसे

के साथ उन्होंने अपने बेटे के इलाज को जारी रखा। सऊदी सरकार और परिवार ने अमेरिका और स्पेन से विशेषज्ञ डॉक्टरों की टीमें बुलवाईं। इलाज में कोई कमी नहीं छोड़ी गई।

20 साल तक ICU में रही जिंदगी

प्रिंस अल वलीद को रियाद के किंग अब्दुलअजीज मेडिकल सिटी में भर्ती कराया गया। बाद में उन्हें रियाद के महल में बने विशेष कमरे में रखा गया, जहां 24 घंटे डॉक्टर, नर्स और मेडिकल सपोर्ट मौजूद रहते थे। रोजाना दवाइयों, इंजेक्शनों और मानिंटरिंग के बीच उनकी सांसें चलती रहीं। कभी-कभी उनके हाथ में हरकत होती या आंखों में हल्की सी झलक दिखती, तो परिवार और चाहने वालों को उम्मीद बंधती थी कि वह एक दिन फिर से मुस्कुराएंगे।

इलाज पर खर्च हुए 328 करोड़ रुपये

20 साल की इस लंबी जंग में सिर्फ समय और धैर्य ही नहीं लगा, बल्कि इलाज पर करीब 40.1 मिलियन डॉलर यानी लगभग 328 करोड़ रुपये का खर्च आया। अमेरिका और स्पेन के विशेषज्ञ डॉक्टरों की फीस, ICU में 24 घंटे देखरेख, लाइफ सपोर्ट सिस्टम और दवाओं का खर्च हर दिन बढ़ता रहा। एक सामान्य ICU में जहां एक दिन का खर्च 1,500 से 2,000 डॉलर आता है, वहां रॉयल देखरेख और विशेष डॉक्टरी निगरानी के चलते यह खर्च कई गुना बढ़ता रहा। लेकिन परिवार ने इसे कभी बोझ नहीं माना। उनके लिए यह अपने बेटे की सांसों को थामे रखने की कीमत थी।

सोशल मीडिया पर बनी रही चर्चा

'स्लीपिंग प्रिंस' सोशल मीडिया पर भी लोगों की उम्मीद बने रहे। उनकी हालत पर समय-समय पर वीडियो सामने आते थे, जिनमें उनके हाथ या आंख की हलचल दिखती थी। लोग दुआएं करते थे, हैशटैग चलाते थे, और कहते थे – "उठ जाओ राजकुमार।" यही वजह रही कि हर छोटी सी हलचल भी लोगों के लिए खुशी की वजह बन जाती थी। बीते शनिवार को आखिरकार 20 साल के लंबे इंतजार के बाद प्रिंस अल वलीद ने दुनिया को अलविदा कह दिया। इस खबर ने पूरे सऊदी अरब में शोक की लहर दौड़ा दी। सोशल मीडिया पर लोग उनके पिता के धैर्य और विश्वास की तारीफ कर रहे हैं। कई लोगों ने लिखा, "पिता ने जिस तरह उम्मीद को जिंदा रखा, वह हर उस इंसान के लिए प्रेरणा है, जो मुश्किल हालात में भी हार नहीं मानता।"

विश्वास की मिसाल बना यह सफर

आज के दौर में जब लोग छोटी-छोटी परेशानियों में हार मान लेते हैं, वहां प्रिंस खालिद की अपने बेटे के लिए उम्मीद और उनका विश्वास दुनिया के लिए एक मिसाल बन गया है। उन्होंने 20 साल तक कभी यह नहीं सोचा कि यह सफर बोझ है। उनके लिए यह सफर अपने बेटे की जिंदगी बचाने की लड़ाई थी, जिसे उन्होंने आखिर तक लड़ा। इस पूरी घटना ने यह सिखाया कि जिंदगी में उम्मीद कभी नहीं छोड़नी चाहिए। जब डॉक्टर भी जवाब दे दें, तब भी विश्वास और प्रार्थना की ताकत चमत्कार कर सकती है।

अंतरिक्ष में भारत की नई उड़ान

ग्रुप कैप्टन शुभांशु शुक्ला की ऐतिहासिक सफलता

भारत ने अंतरिक्ष में एक और मील का पत्थर हासिल किया है। ग्रुप कैप्टन शुभांशु शुक्ला, भारतीय वायुसेना के एक साहसी ऑफिसर और इसरो के गगनयानी, ने हाल ही में 18 दिन की ऐक्सोम मिशन 4 (AX-4) के तहत इंटरनेशनल स्पेस स्टेशन (ISS) पर अपनी यात्रा पूरी की। यह मिशन न केवल भारत के लिए गर्व का पल है, बल्कि यह भारत के बढ़ते वैज्ञानिक प्रभाव को भी दर्शाता है। इस लेख में हम इस मिशन की पूरी कहानी, इसके महत्व, और भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम के भविष्य पर इसके प्रभाव को आसान और हिंगलश स्टाइल में समझेंगे।

41 साल बाद अंतरिक्षमें भारत की वापसी

शुभांशु शुक्ला भारत के दूसरे अंतरिक्ष यात्री हैं, जिन्होंने 41 साल बाद भारत का नाम अंतरिक्ष में फिर से चमकाया। इससे पहले 1984 में राकेश शर्मा ने सोवियत यूनियन के सोयूज T-11 मिशन के जरिए अंतरिक्ष में कदम रखा था। शुभांशु शुक्ला ने न केवल ISS पर पहुंचकर इतिहास रचा, बल्कि वे पहले भारतीय बने जो इस अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन पर गए।

ऐक्सोम मिशन 4, जो 25 जून 2025 को नासा के कैनेडी स्पेस सेंटर, फ्लोरिडा से लॉन्च हुआ, एक प्राइवेट मिशन था, जिसमें नासा, इसरो, यूरोपियन स्पेस एजेंसी (ESA), और स्पेसएक्स ने मिलकर काम किया। इस मिशन की कमांडर थीं पूर्व नासा एस्ट्रोनॉट पैगी व्हिट्सन, और शुक्ला इस मिशन के पायलट थे। उनके साथ पोलैंड के स्लावोश उजनास्की-विस्टिन-एस्की और हंगरी के टिबोर कपु थी थे। यह मिशन भारत, पोलैंड, और हंगरी के लिए खास था, क्योंकि इन तीनों देशों के लिए यह 40 साल से ज्यादा समय बाद अंतरिक्ष में वापसी थी।

शुक्ला ने मिशन के दौरान कई वैज्ञानिक प्रयोग किए, जिसमें इसरो द्वारा डिजाइन किए गए सात प्रयोग शामिल थे। यह मिशन 18 दिन तक चला, जिसमें क्रू ने पृथ्वी की 288 परिक्रमाएं पूरी कीं। 14 जुलाई 2025 को ISS से अनडॉक करने के बाद, 15 जुलाई 2025 को कैलिफोर्निया के सैन डिएगो तट पर स्पेसएक्स ड्रैगन स्पेसक्राफ्ट 'ग्रेस' ने सफलतापूर्वक स्लैशडाउन किया। इस उपलब्धि ने भारत के 1.4 अरब लोगों के सपनों को नई उड़ान दी।

मिशन का वैज्ञानिक और तकनीकी महत्व

ऐक्सोम मिशन 4 का मुख्य उद्देश्य था वैज्ञानिक प्रयोग और रिसर्च। इस मिशन में क्रू ने 60 से ज्यादा वैज्ञानिक प्रयोग किए, जिसमें से सात इसरो द्वारा डिजाइन किए गए थे। ये प्रयोग माइक्रोग्रेविटी में किए गए, जो अंतरिक्ष में कम गुरुत्वाकर्षण की स्थिति होती है। इनमें से कुछ खास प्रयोग थे:

माइक्रोएल्गी और सायनोबैक्टीरिया की ग्रोथ: यह प्रयोग अंतरिक्ष में पौधों और सूक्ष्मजीवों की वृद्धि को समझने के लिए था, जो भविष्य में अंतरिक्ष में खेती के लिए महत्वपूर्ण हो सकता है।

मसल्स रीजेनरेशन: माइक्रोग्रेविटी में मानव शरीर की मांसपेशियों पर प्रभाव को समझने के लिए यह

प्रयोग किया गया।

सीडीस एक्सपेरिमेंट: छह प्रकार के फसलों के बीजों पर अंतरिक्ष के प्रभाव को जांचा गया, जो भविष्य में अंतरिक्ष में खाद्य उत्पादन के लिए उपयोगी हो सकता है।

टार्डिंग्रेडीस की रेजिलिएंस: टार्डिंग्रेडीस, जो छोटे और अत्यधिक टिकाऊ जीव हैं, उनकी अंतरिक्ष में जीवित रहने की क्षमता को परखा गया।

ह्यूमन-कंप्यूटर इंटरैक्शन: अंतरिक्ष में तकनीक और इंसानों के बीच बेहतर तालमेल के लिए यह रिसर्च की गई।

ये प्रयोग न केवल भारत के लिए, बल्कि पूरी दुनिया के लिए महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि ये अंतरिक्ष में मानव जीवन, पोषण, और टेक्नोलॉजी के लिए नए रास्ते खोलते हैं। इसरो के ग्रुप हेड फॉर माइक्रोग्रेविटी प्लेटफॉर्म्स, तुषार फड़नीस ने कहा कि ये प्रयोग भारत की अपनी अंतरिक्ष स्टेशन और गगनयान मिशन की तैयारी में बहुत मदद करेंगे।

इस मिशन का एक और खास पहलू था इसरो और नासा के बीच सहयोग। इसरो ने शुक्ला की सीट और ट्रेनिंग के लिए 5 अरब रुपये (लगभग 59 मिलियन डॉलर) खर्च किए। यह निवेश भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम के लिए एक स्मार्ट कदम था, क्योंकि इससे शुक्ला को अंतरराष्ट्रीय स्तर की ट्रेनिंग और अनुभव मिला, जो 2027 में होने वाले गगनयान मिशन के लिए बहुत काम आएगा।

शुभांशु शुक्ला: एक साधारण हँसान, असाधारण उपलब्धि

शुभांशु शुक्ला का जन्म 10 अक्टूबर 1985 को लखनऊ, उत्तर प्रदेश में हुआ था। वे तीन भाई-बहनों में सबसे छोटे हैं। उनके पिता शंभू दयाल शुक्ला एक रिटायर्ड सरकारी अधिकारी हैं, और मां आशा शुक्ला एक गृहिणी हैं। शुक्ला ने अपनी स्कूलिंग लखनऊ के सिटी मॉन्टेसरी स्कूल से पूरी की। 1999 में कारगिल युद्ध ने उन्होंने प्रेरित किया, और उन्होंने नेशनल डिफेंस

एकेडमी (NDA) के लिए अप्लाई किया। उनकी बहन शुचि मिश्रा के अनुसार, यह एक संयोग था, क्योंकि उनके दोस्त ने NDA का फॉर्म भरा था, लेकिन वह उम्र में बड़ा होने के कारण क्वालिफाई नहीं कर सका। फॉर्म बर्बाद न हो, इसलिए शुक्ला ने इसे भरा और सिलेक्ट हो गए।

2006 में भारतीय वायुसेना में फाइटर पायलट के रूप में शामिल होने के बाद, शुक्ला ने सुखोई-30 MKI, मिग-21, मिग-29, जगुआर, हॉक, डोनियर, और AN-32 जैसे विमानों में 2000 घंटे से ज्यादा उड़ान का अनुभव हासिल किया। 2019 में इसरो ने उन्हें गगनयान मिशन के लिए चुना, और उन्होंने रूस के यूरी गागरिन कॉम्मोनॉट ट्रेनिंग सेंटर, बैंगलोर के एस्ट्रोनॉट ट्रेनिंग फैसिलिटी, और स्पेसएक्स के कैलिफोर्निया हेडक्वार्टर्स में ट्रेनिंग ली।

शुक्ला ने अपने मिशन से पहले कहा था, “मैं सिर्फ उपकरण और इंस्ट्रुमेंट्स नहीं ले जा रहा, मैं 1.4 अरब भारतीयों के सपनों को ले जा रहा हूं।” अंतरिक्ष से अपने पहले मैसेज में उन्होंने कहा, “नमस्ते मेरे प्यारे देशवासियों! क्या राइड थी! हम 41 साल बाद फिर से अंतरिक्ष में हैं। मेरे कंधे पर तिरंगा मुझे बता रहा है कि मैं अकेला नहीं हूं, आप सब मेरे साथ हैं।” यह मैसेज भारत में लाखों लोगों के लिए प्रेरणा बना।

भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम का भविष्य

ऐक्सोम मिशन 4 भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम के लिए एक टॉपिंग पॉइंट है। इसरो ने 2027 में गगनयान मिशन लॉन्च करने की योजना बनाई है, जो भारत का पहला मानव अंतरिक्ष मिशन होगा। इस मिशन में तीन भारतीय अंतरिक्ष यात्रियों को 400 किलोमीटर की लौ अर्थ ऑर्बिट में तीन दिन के लिए भेजा जाएगा। शुक्ला इस मिशन के लिए चार चुने गए अंतरिक्ष यात्रियों में से एक है, और उनकी AX-4 की अनुभव इस मिशन के लिए बहुत कीमती होगा।

इसरो की योजनाएं और भी महत्वाकांक्षी हैं। 2035 तक भारत अपना स्पेस स्टेशन बनाने की तैयारी कर रहा है, और

2040 तक चंद्रमा पर भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम के लिए एक ऐतिहासिक क्षण है। यह मिशन न केवल भारत की वैज्ञानिक और तकनीकी क्षमता को दर्शाता है, बल्कि यह भी दिखाता है कि भारत अब वैश्विक अंतरिक्ष समुदाय में एक मजबूत खिलाड़ी बन रहा है।

अंतरिक्ष यात्री भेजने का लक्ष्य है। शुक्ला का मिशन इन लक्ष्यों की ओर एक मजबूत कदम है। इसरो के चेयरमैन वी. नारायणन ने कहा, “इस मिशन से हमें ट्रेनिंग, सुविधाओं का उपयोग, और अंतरिक्ष में प्रयोग करने का अनुभव मिलेगा, जो हमारे भविष्य के मिशनों के लिए बहुत जरूरी है।”

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी इस मिशन की सराहना की और कहा, “शुभांशु शुक्ला ने न केवल अंतरिक्ष को छुआ, बल्कि भारत की आकांक्षाओं को नई उंचाइयों तक ले गए। यह गगनयान मिशन की दिशा में एक और मील का पत्थर है।”

देशमें उत्साह और प्रेरणा

शुभांशु शुक्ला की इस उपलब्धि ने भारत में उत्साह की लहर पैदा की है। उनके गृहनगर लखनऊ में उनके परिवार, दोस्तों, और स्कूल के छात्रों ने इस मिशन को लाइव देखा और जश्न मनाया। उनकी मां आशा शुक्ला ने कहा, “मेरा बेटा इतने दिनों बाद सुरक्षित लौट आया, मैं भगवान और आप सभी का शुक्रिया अदा करती हूं।” उनके पिता और बहन ने भी इस पल को गर्व का क्षण बताया।

सोशल मीडिया पर भी इस मिशन को लेकर जबरदस्त उत्साह दिखा। कई X पोस्ट्स में लोगों ने शुक्ला को भारत का गौरव बताया और इसे गगनयान और चंद्र मिशन की दिशा में एक बड़ा कदम माना। एक स्ट्रॉटेट, इस्मा तारिक ने रॉयटर्स को बताया, “यह हम भारतीयों के लिए गर्व का उपलब्धि है। मैं भी कुछ बड़ा करना चाहता हूं और दुनिया के लिए योगदान देना चाहता हूं।”

शुक्ला ने ISS से स्ट्रॉटेट्स के साथ बातचीत भी की और उन्हें बताया कि मैंनत और लगन से कोई भी अपने सपनों को हकीकत में बदल सकता है। उन्होंने कहा, “आप में से कई लोग अंतरिक्ष यात्री बन सकते हैं, चांद पर चल सकते हैं।” यह मैसेज नई पीढ़ी के लिए प्रेरणा का स्रोत बना।

भारत की अंतरिक्ष यात्रा का नया अध्याय

ग्रुप कैप्टन शुभांशु शुक्ला का ऐक्सोम मिशन 4 में हिस्सा लेना और उनकी सफल वापसी भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम के लिए एक ऐतिहासिक क्षण है। यह मिशन न केवल भारत की वैज्ञानिक और तकनीकी क्षमता को दर्शाता है, बल्कि यह भी दिखाता है कि भारत अब वैश्विक अंतरिक्ष समुदाय में एक मजबूत खिलाड़ी बन रहा है। इसरो और नासा के बीच सहयोग, माइक्रोग्रेविटी में किए गए प्रयोग, और शुक्ला का अनुभव भारत के गगनयान मिशन और भविष्य के अंतरिक्ष स्टेशन के लिए मजबूत नींव रखेगा।

शुक्ला की यह यात्रा सिर्फ एक व्यक्ति की उपलब्धि नहीं है, बल्कि यह 1.4 अरब भारतीयों के

भारत-चीन सीमा पर तनाव कम करने की दिशा में कदम: एक नया दौर

भारत और चीन के बीच लाइन ऑफ एक्चुअल कंट्रोल (LAC) पर तनाव को कम करने की दिशा में हाल के महीनों में कई महत्वपूर्ण कदम उठाए गए हैं। विदेश मंत्री एस जयशंकर और उनके चीनी समकक्ष वांग यी की मुलाकातों ने दोनों देशों के बीच रिश्तों को बेहतर बनाने की दिशा में एक नई उम्मीद जगाई है।

सीमा पर शांति की ओर कदम: डी-एस्केलेशन की शुरुआत

भारत और चीन के बीच LAC पर तनाव का इतिहास पुराना है, खासकर 2020 में गलवान घाटी में हुई हिंसक झड़प के बाद रिश्ते बहुत खराब हो गए थे। लेकिन अक्टूबर 2024 में दोनों देशों ने डेप्सांग और डेमचोक जैसे विवादित क्षेत्रों में पैट्रोलिंग व्यवस्था पर सहमति बनाई, जिससे डिसएंजमेंट की प्रक्रिया पूरी हुई। जयशंकर ने बताया कि पिछले नौ महीनों में दोनों देशों ने सीमा पर शांति और स्थिरता बनाए रखने में अच्छी प्रगति की है। यह प्रगति आपसी विश्वास और रिश्तों को सामान्य करने की दिशा में एक बड़ा कदम है।

हालांकि, डिसएंजमेंट के बाद भी डी-एस्केलेशन की प्रक्रिया पूरी नहीं हुई है। दोनों देशों की सेनाएं अभी भी LAC के पास 50,000 से 60,000 सैनिकों के साथ तैनात हैं। जयशंकर ने वांग यी से मुलाकात में साफ कहा कि अब डी-एस्केलेशन पर ध्यान देना जरूरी है, ताकि सैनिकों को पीछे हटाया जा सके और शांति स्थायी हो। इसके अलावा, भारत ने ट्रांस-बॉर्डर नदियों पर सहयोग और हाइड्रोलॉजिकल डेटा साझा करने की मांग भी उठाई, जो क्षेत्रीय स्थिरता के लिए महत्वपूर्ण है।

यह प्रगति भारत-चीन रिश्तों के लिए एक पॉजिटिव सिग्नल है, लेकिन विशेषज्ञों का कहना है कि बफर जोन्स (जो 2020 के बाद बनाए गए) को हटाने की जरूरत है, ताकि 2020 से पहले की स्थिति पूरी तरह बहाल हो। इस दिशा में अभी और काम करना बाकी है, लेकिन हाल की डिप्लोमैटिक कोशिशें एक सकारात्मक शुरुआत हैं।

जयशंकर और वांग यी की बातचीत: एक नई दिशा

14 जुलाई 2025 को बिंजिंग में जयशंकर और वांग यी की मुलाकात ने दोनों देशों के बीच रिश्तों को नई दिशा दी। यह जयशंकर की 2020 के गलवान क्लैश के बाद चीन की पहली यात्रा थी, जो शंघाई को ऑपरेशन ऑर्गाइजेशन (SCO) के विदेश मंत्रियों की मीटिंग के लिए थी। इस मुलाकात में जयशंकर ने साफ कहा कि भारत और चीन के रिश्ते आपसी सम्मान, आपसी हित, और आपसी संवेदनशीलता पर आधारित होने चाहिए।

जयशंकर ने कहा, "हमने पिछले नौ महीनों में रिश्तों को सामान्य करने में अच्छी प्रगति की है। यह सीमा पर शांति और स्थिरता की वजह से संभव हुआ। अब हमें डी-एस्केलेशन जैसे अन्य पहलुओं पर ध्यान देना चाहिए।" उन्होंने यह भी जोड़ा कि दोनों देशों को प्रतिस्पर्धा



को संघर्ष में बदलने से बचना चाहिए और मतभेदों को विवाद नहीं बनने देना चाहिए।

वांग यी ने भी इस बात पर सहमति जताई कि भारत-चीन रिश्ते किसी तीसरे पक्ष पर निर्भर नहीं होने चाहिए। उन्होंने कहा कि दोनों देशों को एक-दूसरे पर भरोसा करना चाहिए और आपसी सहयोग को बढ़ावा देना चाहिए। यह बयान खास तौर पर इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि चीन का पाकिस्तान के साथ गहरा रिश्ता रहा है, और भारत ने हमज़ से इस बात को रेखांकित किया कि तीसरे देशों को इन रिश्तों को प्रभावित नहीं करना चाहिए।

इस मुलाकात में दोनों पक्षों ने रिश्तों को और मजबूत करने के लिए कई प्रैक्टिकल कदमों पर सहमति जताई, जैसे कि यात्रा और डायरेक्ट फ्लाइट कनेक्टिविटी को बढ़ाना। यह कदम दोनों देशों के बीच लोग-से-लोग संपर्क को बेहतर बनाने की दिशा में एक बड़ा स्टेप है।

लोग-से-लोग संपर्क: केलाश मानसरोवर यात्रा और पलाहृदास

भारत और चीन के बीच लोग-से-लोग संपर्क को बढ़ाने के लिए कई कदम उठाए गए हैं। खास तौर पर, केलाश मानसरोवर यात्रा की पांच साल बाद फिर से शुरुआत एक बड़ा कदम है। जयशंकर ने इसके लिए चीन का शुक्रिया अदा किया और इसे दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक और धार्मिक रिश्तों को मजबूत करने का एक जरिया बताया।

इसके अलावा, दोनों देश डायरेक्ट फ्लाइट कनेक्टिविटी को फिर से शुरू करने पर काम कर रहे हैं। यह कदम न केवल ट्रॉफिक को बढ़ावा देगा, बल्कि बिजनेस और स्ट्रॉडेस के लिए भी यात्रा को आसान बनाएगा। 2024 में भारत-चीन के बीच द्विपक्षीय व्यापार लगभग 120 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुंच गया, जो पिछले साल अप्रत्यक्ष संदेश था।

चीन के साथ ट्रांस-बॉर्डर नदियों पर डेटा साझा करने का मुद्दा भी महत्वपूर्ण है। भारत ने इस पर बार-बार जोर दिया है, क्योंकि यह नदियां भारत के लिए जल संसाधनों और बाढ़ प्रबंधन के लिए जरूरी हैं। अगर चीन इस दिशा में सहयोग बढ़ाता है, तो यह दोनों देशों के बीच भरोसे को और मजबूत कर सकता है।

दलाई लामा के उत्तराधिकारी का मुद्दा भी एक संवेदनशील विषय है। भारत और चीन को इस मुद्दे पर सावधानी से बातचीत करनी होगी, ताकि यह रिश्तों में नई टेंशन न पैदा करे।

एक सकारात्मक भविष्य की ओर

भारत और चीन के बीच हाल की डिप्लोमैटिक कोशिशों एक सकारात्मक दिशा की ओर इशारा करती हैं। जयशंकर और वांग यी की मुलाकातों ने न केवल सीमा पर शांति को बढ़ावा दिया, बल्कि लोग-से-लोग संपर्क और आर्थिक सहयोग को भी मजबूत करने की दिशा में कदम उठाए। हालांकि, डी-एस्केलेशन और बफर जोन्स जैसे मुद्दे पर अभी और काम करना बाकी है।

दोनों देशों के लिए यह जरूरी है कि वे आपसी सम्मान और संवेदनशीलता के आधार पर रिश्तों को आगे बढ़ाएं। जैसा कि जयशंकर ने कहा, "भारत और चीन के बीच स्थिर और रचनात्मक रिश्ते न केवल हमारे लिए, बल्कि पूरी दुनिया के लिए फायदेमंद हैं।" अगर दोनों देश इस दिशा में काम करते रहे, तो न केवल द्विपक्षीय रिश्ते में मजबूत होंगे, बल्कि क्षेत्रीय और वैश्विक स्थिरता को भी बढ़ावा मिलेगा।

इस प्रक्रिया में चुनौतियां तो हैं, लेकिन हाल की प्रगति दिखाती है कि सही दृष्टिकोण और डिप्लोमैटिक कोशिशों से भारत और चीन एक सकारात्मक भविष्य की ओर बढ़ सकते हैं।



प्रभु कृपा दुर्दिन निवारण समाप्ति

BY

**Arihanta
Industries**

- BHRINGRAJ
- AMLA
- REETHA
- SHIKAKAI

100 ML



15 ML



**ULTIMATE
HAIR
SOLUTION**

NO ARTIFICIAL
COLOR
FRAGRANCE
CHEMICAL

KESH VARDAK SHAMPOO

The complete solution of all hair problems:

- Prevent hair fall and make hair follicle strong.
- Promote hair growth.
- Free from all artificial & harmful chemicals like., SLS.
- 100% pure ayurvedic shampoo.
- Suitable for all hair types.



Arihanta Industries

ORDER ONLINE @ :

amazon

arihanta.in